

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

सम्पादक

पी० एन० चक्रवर्ती,

बी० ए०, एल्० टी, एफ्० आर० जी० एम्०

और

लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Printed and published by K. Mitra, at The Indian Press, I
Allahabad

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
माको पोली	१
प्रिन्स हेनरी नाविक	१०
वार्योलोमो डियाज	१६
वास्को डि गामा	१८
क्रुस्टोफर कोलम्बस	२२
ऐमेरिगो वेस्पूका	२४
वास्को न्युनज डी बस्कोवा	३६
सिनेग्टियन कैबट	३८
फर्नैंडो डी मंगलहर्म या मैगिलन	४३
फर्नैंडो कांर्टिस	४७
फ्रेंसिस्को पिजाग	५१
सर ह्यूग विलांग्री	५६
सर फ्रेंसिस ड्रेक	६१
सर मार्टिन फ्रोबिशर	६८
सर वाल्टर रेली	७३
जेक्स कर्टियर	७७
सेमुयेल डी शैप्ले	८०
भगो पार्क	८२

विषय	पृ
नेम्स ध्रुम	८१
जॉन हैनिंग स्पाक	८३
डविट लिक्विस्टन	८४
हनरा मार्टिन स्टैनता	१०२
गनिल जेसन टस्मन	१०७
विलियम डैपियर	११०
रुप्तान कुरु	१११
मैथ्यू फिलटर्स	११५
चार्ल्स स्टर्ट	११७
एटवड जॉन आयर	१२०
सर अलेक्जेंडर मफेजी	१२३
सर जॉन प्रकलिन	१२५
डाक्टर प्रिचोफ नैनमन	१२७
रुप्तान एमडसेन और कप्तान स्कॉट	१२८

त्रिपय

जम्म धूम
जॉन रैनग स्पाथ
डविट लिचिगस्टन
इनरी मार्टिन स्टोन
एविल जसन रैर
विलियम हेंपियर
कप्तान कृफ
मैथ्यू फिलडस
चाल्म स्टट
एडवड जॉन अः
सर अलेक्जेंडर
सर जॉन प्रैरुहि
डाक्टर प्रिजोफ
कप्तान एमॅडमेन

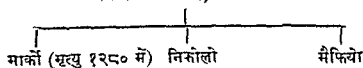
देशान्वेषण की सरल कथाएँ

मार्को पोलो

जन्म-स्थान—वेनिस, लगभग १२५० ई०,

मृत्यु—१३२३ ई०

सैन फेलिस का ऐंड्रिया पोतो



मार्को पोलो

हम उस समय की बात कहते हैं जब न तो रेलगाडी थी, न हवाई जहाज, न पैरगाडी और न मोटरकार। एक देश से दूसरे देश में जाना कठिन था। जंगल, पहाड, नदी और मरुभूमि के अतिरिक्त डाकुओं का भी भय था। लोग चिर-काल के लिए निदा लेकर घर से निकलते थे। निदा के समय राना-पीटना मच जाता था। सामान लादने के लिए ऊँट,

गङ्गा या धर्म ललित गगन था। कभी कभी ये मयारी का भाव प्राप्त था। गिह्य निरुलना निरापद न था। वन्द्य ने रत्न, पर भाला ननवार और शृपाग आदि साथ रखता था। इतनी कठिनाइयों के होते हुए भी धर्म-प्रचारकों ने अपना कार्य टोला न किया। योरोप में ईसाई धर्म फैला हुआ था। ईसाइया का, एशिया में भी, अपने धर्म का प्रचार करने का प्रबल इच्छा था।

उठता प्रायद्राप जा योरापकें दक्षिण में है, उस समय बड़ा हा प्रसिद्ध था। धर्म गिना, वाणिज्य प्रभृति प्रत्यक विषय में उठती प्रायद्राप, भारतजर्ष क ही मद्दश, विरयात था। यहाँ का धर्मकेन्द्र राम नगर था। प्रधान धर्मयाजक यहाँ रहा करने थे। धार्मिक विषयों में इन्हीं का मत सब ईसाई मानते थे। इनके अधीन अन्य धर्म प्रचारक पादरी थे। दूर देशों में ये ही लोग जा जाकर धर्म का प्रचार करते थे। गारीरिक कष्टों और विपत्तियों को, धर्म के निमित्त, ये तुच्छ समझते थे। जिस प्रकार रोम धर्म का केन्द्र था उसी प्रकार वेनिस वाणिज्य का केन्द्र था। शेफ्सपियर की प्रसिद्ध पुस्तक 'मचट आफ वेनिस' का नाम कदाचित् तुमने सुना होगा। शाइनाक वेनिस का ही रहनेवाला था। वेनिस के जहाज भूमध्यसागर के किनारे के हर प्रान्त में व्यापार के निमित्त पहुँचा करते थे। प्राकृतिक स्थिति के विचार से भी यह एक अच्छा वाणिज्य-केन्द्र था। मानचित्र में देखो—

यह एड्रियाटिक सागर के उत्तरी किनारे पर, भूमध्यसागर के आधे मार्ग में, एक अद्भुत बन्दरगाह है। और, आल्पों के दर्रे बहुत दूर न होने के कारण यहाँ से मध्य योरोप की व्यावसायिक वस्तुएँ मुगलता से एशिया का भेजी जा सकती हैं और वहाँ की वस्तुएँ यहाँ लाई जा सकती हैं।

निकोलो वेनिम नगर का ही रहनेवाला था। यह धर्म और वाणिज्य की बढ़ती के निमित्त, अपने भाई मैफियो के साथ, सन् १२५० ई० में एशिया की ओर चल दिया। पुत्र-सन्त भी इस कार्य में बाबर न हुआ। इनका पुत्र मार्को पोलो, जो इसी वर्ष वेनिम नगर में जन्मा था, अभी एक वर्ष का न होने पाया था कि निकोलो को धर्म और वाणिज्य की सूझ ने घर बैठने न दिया। वह इस बच्चे को छोड़ टर्की की राजधानी कुस्तुनतुनिया चला हुआ, बहुत दिनों के पश्चात्, बुधारा जा पहुँचा। पर वहाँ उसकी भापा कौन समझता ? वहाँ मुगलों की भापा बोली जाती थी। निकोलो ने देखा कि यदि वह मुगल भाषा नहीं सीखता है तो धर्म प्रचार और वाणिज्य के कार्य में सफलता नहीं हो सकती। इसलिए वह इस भाषा को सीख कर फारस के राजदूत के साथ कुबलईखों का राजधानी की ओर चल निकला।

कुबलईखों गेंगिसगन का पौत्र था। वह एक विस्तृत राज्य का शासक था। तातारियों ने १३वीं सदी में मंगोलिया के पठार से इधर चीन तक, जिसको ऊँचे भी कहते हैं,

श्रीर श्वर गंगप में ददेरी तक अपना राज्य फैला लिया था । इस साम्राज्य की राधानी सिङ्गन पहाड पर शांगट्ट नगर म था । यह सम्राट् बडा पतापशाली था । इमने विदेशियों कि वडी आवभगत का श्रीर सौ पादरियों को निमत्रण भेजा कि वे उसक राज्य म आने श्रीर तातारियों का अपनी विधा श्रीर दुद्धि क बल मे इसाई बनावे । इम निमत्रण-पत्र को लकर निकालो अपने भाई के साथ, १६ वर्ष के पश्चात्, मन् १२६६ ई० र घर लौट आया ।

यहाँ प्रधान धर्म-याजक का देहान्त हो चुका था श्रीर पादरी लोग विदेश जान का प्रस्तुत न थे । इसलिए ३ वर्ष तक अपना देश में रहन के पश्चात् निकालो अपने भाई मैफियो, पुत्र मार्का पोलो श्रीर फवल दो पादरियों को साथ लेकर एशिया के पश्चिमा प्रान्त सीरिया में पहुँचा । उसने कुबलईर्यों क लिए जरूमलम के पवित्र मन्दिर के दाप से तेल ले लिया, क्योंकि कुबलईर्यों ने प्रधान धर्म-याजक को इम तेल के लिए भी लिगा था । इस समय यहाँ पर विदेशियों ने आक्रमण कर मर्रा था । इस कारण पादरी लोगों को इतनी घबरा-हट हुई कि उन्होंने आगे बढ़ना पसन्द न किया, वे लोग इटला लौट गये । साठ तीन वर्ष चलने क पश्चात् निकालो मार्का पोलो श्रीर उमका चचा मैफियो कुबलईर्यों क दरबार में दूसरी बार पहुँचे । कुबलईर्यों इस समय कमेनफु नगर था । यह नगर अब शांगट्ट के नाम से प्रसिद्ध है । य



कुचलाइयाँ का एक डाकिया

चीन की दीवार के बाहर पेकिंग नगर से ३६७ मील दूर है। आजकल हम यहाँ रेल से जा सकते हैं।

कुबलईखाँ को इनसे मिलने की आशा न थी। पर ३१ वर्ष के पश्चात् इन लोगों को देखकर वह बहुत ही सन्तुष्ट हुआ। उसके बुलाये हुए १०० पादरी तो नहीं आये थे पर नवयुवक मार्को पोलो को देखकर उसके आनन्द की सीमा न रही।


मार्को पोलो ने अब कई भाषाओं के सीखने का निश्चय किया। थोड़े ही समय में उसने मंगोल, फारसी और तिब्बती भाषाएँ सीख लीं। कहानी लिखने और कहने की शक्ति उसमें अद्भुत थी। यहाँ तक कि कुबलईखाँ ने एक बार इसके लिए यह कहा था कि यदि यह जीवित रहा तो एक प्रसिद्ध मनुष्य होगा। कुबलईखाँ ने नवयुवक मार्को पोलो को चीन और भारतवर्ष में कई बार भेजा। इसके अतिरिक्त मंगोलिया की राजधानी, कराकोरम, मियान्पा, जो दक्षिणी इंडोचीन में है, सुमात्रा और फारस की खाड़ी में भी वह भेजा गया था। उसे बड़े बड़े पदों पर उमने नियुक्त किया। इसी समय मार्को पोलो ने चीन के प्रत्येक प्रान्त को भली भाँति देखा और आश्चर्यजनक बातों को लिख लिया।

चीन में पहले पहल यही योरोपनिवासी गया था। इसने तावारियों के विषय में लिखा है "ये लोग एक स्थान बहुत दिनों तक नहीं टिकते। ऋतुपरिवर्तन के

य भी स्थानपरित्रीण करते हैं। शीतकाल में ये लोग दक्षिण के एक ठण्डे प्रदेश में चले जाते हैं जहाँ इनके पशुओं के चरान का घास होता है और ग्रीष्मकाल आते ही उत्तर की ओर चले जाते हैं। यहाँ इनके पशुओं के लिए घास और पानी पर्याप्त मिलता है। मच्छरों का भी उपश्रवण प्रायक नहीं होता। इनके साथ डरा होता है जिसको तिर्य हुए ये लोग देश देशान्तर का भ्रमण करते हैं। इनका मुख्य भण गाय, बैल, बकरा, बकरी, भेड़, ऊँट और घोड़े हैं। इन जानवरों के गल्ले हजार दो हजार से कम नहीं होते और इनका एक जगह रहना कठिन होता है। एक स्थान की घास समाप्त हो जाना पर इनको दूसरी जगह ले जाना पड़ता है। पर इनका यह अर्थ नहीं कि राज्य में कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है। सबके अच्छी हैं, उनके किनारों पर पेड़ लगे हुए हैं। इसमें गर्मियों में छाया रहती है और जाड़े में जब धरती बरफ में ढक जाती है तब इन पेड़ों से रास्ता प्रकट होता है। पश्चिम मील के अन्तर पर धर्मशालाएँ होती हैं। वहाँ चार नौ घोड़े मरदा प्रस्तुत रखे जाते हैं, क्योंकि राजदूतों का न जाने कब इनका आवश्यकता हो। चिट्टी-पत्री भेजने का भी प्रबन्ध है। तुमने देखा होगा कि आज-कल गाँवों में डाकिया, डाक ले जाते समय, कैसे घुँघरू बजाता हुआ जाता है। इस प्रकार उस समय भी, हर तीन मील पर, ऐसे डाकिये कमरे में घुँघरू बाधकर डाक लिये हुए दौड़ते और एक दूसरे

को अपनी डाक दे देते थे। निर्दिष्ट स्थान पर, बिना अधिक श्रम के, डारू पहुँच जाती थी। राज्य में कोयला, मिट्टी का तेल और अन्य गनिज पदार्थों की भी कमी न थी। राज-महल के बार में लिखा है कि राजा ऐसी सगमरमर की कांठी में रहता था जिसके कमरे स्वर्णमण्डित थे।

मार्को पोलो चीन के सौन्दर्य पर मुग्ध तो अवश्य था पर घर में निकले उसे बहुत दिन हो गये थे अत वहाँ से लौटने के लिए वह व्याकुल हो उठा। परन्तु कुबलईखाँ उनको इतना चाहता था कि उसे घर नहीं जाने देता था। अन्त में ईश्वर की कृपा हुई। सन् १२६१ ई० में फारस के वृद्ध सम्राट् की रानी का देहान्त हो गया और उसने कुबलईखाँ की कन्या से पाणिग्रहण करना चाहा। कुबलईखाँ की बेटी उस वक्त केवल १७ वर्ष की थी। इतनी दूर की स्थलयात्रा असम्भव समझकर कुबलईखाँ ने इन वेनिस-निवासियों को, जो समुद्रपथ को जानते थे, लडकी पहुँचाने का भार सौंपा।

कुबलईखाँ की बेटी के साथ चीन होते हुए ये लोग फोकीन, जा प्रशान्त महासागर के किनारे पर है, पहुँचे। वहाँ से समुद्र-यात्रा आरम्भ हुई। हजार मनुष्यों को लेकर २३ जहाज तीन महीने तक चलते रहे। अन्त में सुमात्रा द्वीप दिग्राई पडा। ६०० नाविकों का देहान्त हो चुका था और मार्ग भी बहुत तय करना था। पर मार्को ने राज बढाया। तुमने नकशे में सिगापुर का बन्दरगाह  ये लोग

मिगावर हात हुए सालान के दक्षिण में पहुँचे और वहाँ से भारत-दर्शक पश्चिम उट के निकट से होते हुए आरमज पहुँचे। यह यर्म का मृत्यु का चुकी थी। इसलिए उसका पुत्र धजन न गन्धमारी के साथ विवाह कर लिया। अब मार्को को घर का अउसर मिला गया। उसे दो परवाने (अनुमति-पत्र) मिले। जलमार्ग छोड़कर ये लोग सीधे म्घल-पथ से काले सागर के किनारे ट्रेनानाड नगर में पहुँचे। यहाँ फिर इनको एक नहाज मिला और ये वेनिस की ओर चल दिये।

सन् १२९५ ई० में जब ये वेनिस पहुँचे तो वहाँवालों ने न तो इनका पहचाना और न इनकी बातों पर विश्वास ही किया। मार्को ने एक दिन अपने भाई-अन्धुओं का न्योता भेजा। जब सब लोग आये तो वह मरमल के कपड़े पहनकर निकला। उनके रंग पी चुकने पर उसने रशम के कपड़े पहने और मरमल के कपड़े बाँट दिये। अन्त में जब लोगों की विदाई का समय आया तब उसने फिर नये कपड़े पहन लिये और रशमी कपड़ बाँट दिये। इस अमीरी चाल पर लोग बड़े ही आश्चर्यान्वित हुए। पर उन्हें अब तक एशिया के धन के किरमे सत्य प्रतीत न हुए थे कि इनमें मार्को ने अपना एक पुराना कपड़ा फाड़ डाला और उसमें से बहुमूल्य हारे, मोती, पत्रा आदि निकालकर वह बाँटने लगा। अब भला किसको विश्वास न होता? एशिया की बहुमूल्य वस्तुओं को देखने के लिए मार्को के घर में भीड़ लग गई।

कुछ दिनों के पश्चात् वेनिम और जिनेवा में युद्ध प्राग्भ हुआ। यहाँ मार्को पोलो एक जहाज का नायक बना दिया गया। किन्तु सन् १२६८ ई० में वह बन्दी बनाकर जिनेवा के कारागार में भेज दिया गया। इसी कारागार में इमने एशिया का पूरा वृत्तान्त, एक सार्थी क़ेदी से, लिखवाया। इस क़ेदी का नाम रस्टिसियाना था। यह 'पिसा' का रहने-वाला था। कारागार से छूटते ही मार्को पोलो वेनिम गया और वहाँ ग्रैंड कौंसिल का सदस्य बना दिया गया। एशिया के विवरण का इमने फिर फ्रेंच भाषा में अनुवाद करवाया परन्तु उसे छपवा न सका।

सन् १३२३ ई० में इसका देहान्त हो गया। मृत्यु के बाद सन् १५५६ ई० में इसका 'एशिया के भ्रमण का विवरण' छपा गया। इस विवरण का पढ़कर योरोप के अन्य प्रान्तों के लोगों को भारतवर्ष और पूर्वी देशों के देखने की प्रबल इच्छा हुई। तुमने वास्को डि गामा और कालम्बम का नाम सुना होगा। इनके बारे में तुम्हें फिर बताया जायगा।



प्रिन्स हेनरी नाविक

जन्म स्थान—आपाटॉ, १३९४ ई०,

मृत्यु—१४६३ ई०

शाका पाना क पश्चात् और कई भ्रमणकारी एशिया मे
आयें और कुछ दिनों तक भ्रमण करके अपने देश को लौट
गये । इनमें वनिमनिवासी फ्रायर ब्राडोरिक और टैंगियर-
निवासी इन वनता प्रसिद्ध हैं । इन सबने अधिकतर स्थलमार्ग
से ही देश भ्रमण किया । पर हम जिनके विषय में लिख रहे
हैं उन्होंने जलमार्ग से ही दूर दूर तक जाकर नये नये देशों
का पता लगाया था । कारण क्या था ? वेनिसवाले भी
या भूमध्यसागर क भिन्न भिन्न प्रान्ता में अपना माल ले जाते
और वहाँ का वस्तुएँ अपने देश में लाते थे । दूर देशों में
जाने का प्रयाजन भी यही था ।

तुमने पढ़ा होगा कि एशिया क स्थल-मार्ग निरापद न
था । लुटेरों से घबरा कठिन था और समुद्र का यात्रा से
सब लाग डरते थे । इस विषय में बहुत सी अद्भुत कहा-
नियाँ भी रची गई थी । एटलांटिक महासागर के विषय
में कुछ लोग कहते थे कि यह जल-दैत्यों से भरा हुआ है,
कोई इसे साँपों से भरा हुआ बताते, और कोई कहते कि

सेठिया जंतु

दोनाम, (१)



प्रिन्स हेनरी नाविक

मूर्य इतना गचण्ड है कि आदमी वहाँ जाते ही मूर्ख होते हैं। ऐसे समुद्र में लुटेर कहां ? फिर समुद्र-मार्ग में खान भी थ। समुद्र में न रेगिस्तान है, न पहाड़, न जंगल और न भील या उदी-नाले। एक बार चल दिया तो बन्दर नहीं। उसक द्वारा भारा भारी वस्तुओं को ही खानाने जाई जा सकती थी। परन्तु योरोपवालों के समुद्र-मार्ग में सबसे बड़ा लाभ यह था कि उन्हें मुसलमानों को कुछ नहीं देना पड़ता था। वैसे तो एशिया और अफ्रिका के मुसलमान यागपवालों से अपनी वस्तुओं को देने में मूर्खों के अतिरिक्त कर भी लेते थे। जब तक समुद्री मार्ग का खोज-खता था तब तक ये लोग भी विवश थ। परन्तु खोज-खत मूर-शासन से छुटकारा पा चुक थ। अतः खोज-खत पर उनका भी ध्यान गया।

स्थिति क विचार से इनको जर्मनी के समुद्र-मार्ग की सुगमता थी। पूर्व में भूमध्यसागर और पश्चिम में अटलांटिक महासागर होने के कारण य इस कार्य के लिए याव्य भी थ। धार्मिक उत्साह की भी इनमें कमी न थ। इस समय इनका एक राजा भी अच्छा मिल गया था। गना जॉन ने (१३८३-१४३३) इस स्फुरण की नींव डाली। इन्होंने इंग्लैंड राजकुमारी, जॉन आफ गॉट को शाहा, स विवाह कर लिया। उससे इनके पाँच लड़के थ। टाटा लडका जॉन ओपोर्टे में, सन् १३६४ में, जमा था।

हेनरी वटा मातृभक्त, देशभक्त और धार्मिक था। मूर लोगों का पराजित करने का इसका प्रण था। एक बार जय यह मना लेकर चलने लगा, इसकी माँ वामार हो गई और इसका रुकना पडा। मरते समय इसकी माँ ने भी इसका मूर विजय के लिए अनुमति दी थी। माता क मृतक-मस्कार क बाद इसन अपनी सेना सहित मन् १४१५ ई० में जिब्राल्टर क दफिनन सिपटा पर आक्रमण किया और इस मूर भूमि का जीत लिया।

इस जीत क बाद हेनरी पुर्नगाल लौट आया और कॅंप मट विसेंट क निकट समुद्रतट पर नौ चालन और मसुद्र-यात्रा क विषय म पढने और पढाने लगा। उमने बहुत स नकशे एकर क्रिय और अपने नाविकों का मैरिनर्स कम्पास (कुतुबनुमा) का उचित प्रयोग सिखाया और आकाश-विज्ञान भी सिखाया। इस विद्या को सारने यहाँ दूर दूर से नाविक आय और उन्होंने बहुत लाभ उठाया। धार्मिक उन्माह इसमें था ही। जब मूरों से इसने सहारा के दक्षिणी भाग के विषय में सुना और उनको वहाँ का माल—तजूर, सोना, हाथीदाँत, छुहार आदि—लाभ देगा तो इसके मन में उक्त प्रदेश में समुद्र-मार्ग से पहुँचने की प्रबल इच्छा हुई।

कई वर्षों तरु यह अपने कप्तानों को इधर-उधर भेजता रहा और उनकी जानकारी से लाभ उठाता रहा। इसने चाहा कि अफ्रिका के ध्रुव-दक्षिण को पार कर भारत की राह

खोज निकाले। इसी खोज में इसने अपनी सारी अवस्था पिता दी। परन्तु एक आकाश-विज्ञान की जानकारी से ही लाभ नहीं हो सकता था। इसी कारण इसने एक प्रकार के ऐसे जहाज बनवाये जिनसे दूर की यात्रा किसी सीमा तक निरापद हो सकती थी। इन जहाजों को कैरावेल कहते हैं।

सन् १४१५ ई० से १४३० ई० तक पुर्नगाल के नाविकों ने कैनरी द्वीपसमूह और मडिगा का अपना लिया। यहाँ के लकड़ी के व्यवसाय से इनका बड़ा लाभ हुआ। इसके पश्चात् कई एक कैरावेल कप बोजाडार के दक्षिण की ओर भेजे गये। सन् १४३४ ई० में हेनरी का एक कप्तान भी बोजाडार के दक्षिण पहुँचा। सन् १४३५ ई० में बोजाडार से पाँच सौ मील दूर ये लोग राया डी आरा तक पहुँचे। सन् १४४१ ई० में पहली बार इन्होंने कप ब्लाको पार किया। यहाँ कुछ काले आदमियों से भेंट हुई। ये आदमी बहुत ही बदसूरत थे। इनकी नाक चपटी, आँखें छोटी छोटी और हाँठ फूले हुए थे। अपने शरीर का इन लोगों ने गोदने के चिह्न से भंग लिया था। बदन पर कोई कपड़ा न था। केवल लँगोटी लगाये रहते थे। हाथ में या तो भाला था, या खड्ग, या तीर-धनुष। बोली इनकी अद्भुत थी। प्रायः ये लोग विदेशियों से इशारे से ही बातें करते थे। इनका मुख्य भोजन पशुओं या मनुष्यों का मांस था और इन्हीं का शिकार करना इनका पेशा था। अब ये लोग बन्दी क

गये । एक वृद्धुम्बियां ने उनका छुड़वाने के लिए उन पर-देशियों का बहुत सा सोना दिया, जिसमे मालामाल होकर जब य पर लौटे तो लोगों ने इनकी बडा आवभगत का और हेनरी के इस उद्योग की प्रशंसा हुई । पर इसका फल विपरीत हुआ । पुर्तगालियों का अब इन काने आदिमियों के पर-देश का ही ध्यान रह गया, और देशों का पता लगाने में अधिक उत्तति न हो पाई । हेनरी के निकट जब ऐसे वन्दा आ जाते थे तो उनका वह शिजा देता था और ईसाई बना लेता था ।

सन् १४४५ ई० में नाविकों का कुछ खजूर के पेड देख पड । इससे उन्हों सोचा कि रगिस्तान की अन्तिम सीमा आ चुका । वास्तव में ये लोग रेप पामस में पहुँचे थे । यहाँ इनका फिर जाल आदमी मिले । ये लोग बहुत ही अद्भुत किशितियाँ में बैठे हुए थे । ये किशितियाँ ताड के पेडों का तना खोपला करके बनाई गई थी । किशितियों को ये लोग अपने पैरों से गे रहं थे । पुर्तगाल के कैरावेल जहाजों को देखकर इन्होंने समझा कि काइ बडी चिडिया आ रही है और ज्यां ज्यां ये निकट आते गये त्यों त्यों इनका भय बढता गया और ये लोग किनार की ओर भाग गये । कुछ देर के पश्चान् भाला और गद्ग लेकर बहुत से काले आदमी समुद्र-तट पर आ गडे हुए । तब जहाजों से उतरना निरापद न समझकर पुर्तगाली लौट गये ।

हेनरी ने अत्र की बार बहुत से जहाज इसी दिशा में भेजे । इमने घाडा बहुत रोज का काम होता रहा । सिने-गाल नदी का भी पता लग गया । पर लोग अनजान देश में जान म डर और खदश को लौट गये ।

सन् १४५५ और १४५६ ई० में वेनिस निवासी फैंडामोस्टो, जो हेनरी का नाकर था, गैम्ब्रिया नदी के पास पहुँचा । उसने वहाँ के लोगों में मेल कर लिया । सन् १४५८ ई० में हेनरी ने डीगो गोमेज का अन्तिम बार भेजा । इमने मियरालियाने की साने का पानों का पता लगा लिया । हेनरी ने अत्र एक सुन्दर नया नकशा भी बनवा लिया था । पर सन् १४६३ में इमका देहान्त हो गया ।



गये। इनके कृत्याभियोगों ने जनको छुटवाने के लिए इन पर-
देशियों का गहन सा साया दिया, जिसमें मानामान होकर
जब य पर लौटते तब लोगों ने इनकी बड़ी आबगगा की और
हमारे क इस उपाय की प्रशंसा हुई। पर इसका फल विपरीत
था। पुर्तगालियों का अब इन पात्र आदिभियों के पर-
ना का ही प्यान रह गया, और देशों का पता लगाने में
अधिक प्रवृत्ति न हो पाई। हमारे निकट जब हम मन्दी
आगत हो ता उनका बह गिया देता था और ईमाई बना
लाता था।

सन् १५५४ ई० में ताविकों का कुछ समुद्र के पेटे देर
पड़। इसमें उन्होंने सोचा कि रंगिस्तान की अन्तिम सीमा
आ चुका। वास्तव में ये लोग कप पामस में पहुँचे थे। यहाँ
उनका फिर काल आदमी मिल। ये लोग बहुत ही अदभुत
क्रियतियों में धँसे हुए थे। ये क्रियतियाँ गाड़ के पेटों का
तना खोखला फरक बनाई गई था। क्रियतियों का ये लोग
अपने पैरों से रख रहे थे। पुर्तगाल के कैरानेत जहाजों को
देखकर इन्होंने समझा कि कोई बड़ी चिन्तिया आ रही है
और ज्यों ज्यों ये निकट आते गये त्यों त्यों इनका भय बढ़ता
गया और ये लाग किनारे का ओर भाग गये। कुछ देर के
पश्चात् भाला और गद्ग लेकर बहुत से काले आदमी समुद्र
तट पर आ खड़े हुए। तब जहाजों से उतरना निरापद न
ममकर पुर्तगाली लौट गये।

हेनरी ने अग्र की वार बहुत से जहाज इसी दिशा में भेजे । उनमें घोडा बहुत स्वाज का काम होता रहा । मिनेगाल नदी का भी पता लग गया । पर लोग अनजान देश में जान में डर और भ्रम का लौट गये ।

सन् १४५५ और १४५६ ई० में प्रिन्स निजासी कैबामोस्टा, जा हेनरी का नौकर था, मैम्बिया नदी के पान्त पहुँचा । उसने वहाँ के लोगों से मेल कर लिया । सन् १४५८ ई० में हेनरी ने डोगो गोमेज का अन्तिम वार भेजा । इसने सियरालियाने की साने की गाना का पता लगा लिया । हेनरी ने अग्र एक सुन्दर नया नगरा भी बनवा लिया था । पर सन् १४६३ में इसका देहान्त हो गया ।



चार्यालोमो डियाज

मृत्यु—सन् १५०० ई०'

हन्ग की मृत्यु के पश्चात् नये देशों के खोजने का कार्य सिधिल ग गया। एक-आध उत्साही युवक अब भी जहाज लेकर समुद्र-यात्रा करके थोड़े से स्थानों का पता लगाता रहा, लेकिन इन लोगों का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत नहीं था। क्विसा बड़े स्थान का पता लगा भी नहीं। सन् १४७१ ई० में फरनानटोपो ने एक द्वीप का आविष्कार किया और अपने नाम से उसको प्रसिद्ध किया। फिर उसने विपुवत रेखा को भी पार किया।

सन् १४८१ ई० में जॉन द्वितीय पुर्तगाल की राजगद्दी पर बैठा और फिर खोज का कार्य आरम्भ हुआ। सन् १४८४ ई० में डीगो काब काङ्गो नदी के मुहाने तक पहुँचा। उसने वहाँ अपना ऐसा भिक्का जमाया कि वहाँ का राजा उसका कहने से ईसाई हो गया। सन् १४८६ ई० में डीगो काब बारिबश की खाड़ी तक पहुँच गया।

उधर बार्थोलोमो डियाज दो जहाजों का लेकर सन् १४८६ ई० में अफ्रिका के दक्षिण की ओर चल पड़ा। जहाँ तक हो सका, उसने पश्चिमी किनारे से अधिक दूर अपना

जहाज न रक्या । फल यह हुआ कि इस यात्रा में बहुत दिन लग गये और अन्त में यह आरेज नदी के मुहाने के पास पहुँचा । मकररेखा के दक्षिण अब मदी अधिक मालूम होना लगा । यहाँ जलधारा वेगवती थी । आंधी भी प्रचण्ड थी । डियाज के जहाज अब किनारे से बहुत दूर हो गये और १५ दिन तक किनारे का कुछ भी पता न चला । डियाज पूर्व का ओर चलकर फिर उत्तर की ओर चला । अब भूमि दृष्टिगाचर हुई । यह मोसेल की खाड़ी में पहुँच गया । अब उससे पूर्व एक दूरी खाड़ी में पहुँचा जो अल-गोवा वे के नाम से विख्यात है । फिर यह ग्रेट फिश रीवर के मुहाने तक गया पर इसका सारा घर लौटने के लिए व्याकुल हो गया थे, इससे इसका घर वापस आना पडा । लौटते समय यह किनारे के निकट ही निकट चला और उस अन्तरीप का, जिसको लोग बहुत दिनों से पार करना चाहते थे परन्तु पार नहीं कर सके थे, इसमें पहली बार देखा । अब सब लोग बड़े ही आनन्दित हुए और इस समाचार को पहुँचाने के लिए वापस आय ।

यहाँ राजा बड़ा प्रसन्न हुआ । उसने इस अन्तरीप का नाम कंप आफ टेम्पेस्ट रखना उचित न समझकर उसका नाम कैरो डी विडना एस्परेखा या कंप आफ गुड होप रख दिया । वास्तव में उसने सोचा कि अब पुर्तगालवालों के लिए भारत और पूर्वी देशों का मार्ग खुल गया ।

लोगों को अब एटलांटिक महासागर से होकर एशिया जाने की सूझी और ऐसे ही किसी प्रलय में ब्रेजील की ओर जाते समय सन् १५०० ई० क लगभग डियाज ने आँधी में अपने प्राण खो दिये ।

1888



वास्को डि गामा

जन्म-स्थान—साइन्स, मृत्यु-स्थान—काचीन

वास्को डि गामा का जन्म मन् १४ - ई० अलगभग पुर्तगाल के साइन्स नगर में हुआ था। इसकी वास्तविकता की बातें हमें मालूम नहीं। इसका प्रनिद्ध उस समय हुई जब इसने डियाज के पश्चात् रूप आफ गुड हाप का पार किया और भारत की नई राह निकाला। स्पेन के राजा ने फाल्म्यस को एटलांटिक का पश्चिमी किनारा ढूँढने की अनुमति दी थी। उसकी यात्रा के बाद जब यह प्रनिद्ध हो गया कि वह चीन पहुँचा है तो पुर्तगाल के राजा इमजुयल ने मन् १४९७ ई० में वास्को डि गामा का चार जहाजों के साथ डियाज का कार्य पूरा करने के लिए भेजा। वास्को डि गामा ने अफ्रिका के किनारे किनारे चलना पसन्द न किया, क्योंकि उसमें अधिक दिन लग जाते। वह गरफ आफ गीनी को छोड़ साधा आरज नदी के दक्षिण जा पहुँचा। वहाँ से कैप आफ गुड होप को पार करता हुआ वह ईसा के जन्म के दिन नेटाल के पूर्वी किनारे पर जा रुका और वहाँ से मुजैम्बिक के किनारे पहुँचा। वहाँ से मुम्बासा होता हुआ मलिन्दा में आया। मार्ग में साथी लोग बीमार पड़ गये। मुम्बासा में वहाँ के

लोगों ने इससे कुछ रोक टाक की किन्तु ईश्वर का कृपा से मलिन्दा के राजा ने इसका आदर किया। इस राजा ने वास्का डि गामा का भारतवर्ष का समुद्री राह बताने के लिए एक नाविक साथ कर दिया। २० दिन के पश्चात् सन् १४८८ ई० में मद्रास के पास इसका जहाज पहुँचा।

कालीकट का नाम तुमने सुना होगा। यह बहुत पुराना तिजारती स्थान है। भारत के हर प्रान्त से व्यवसायी लोग यहाँ अपना माल लाते और विदेशियों से वाणिज्य-व्यवहार करते थे। यहाँ के 'क्यालिका' कपड़े की ख्याति दूर दूर देशों तक फैली हुई है।

यहाँ वास्का डि गामा को अधिक रुष्ट नहीं हुआ, क्योंकि यहाँ के राजा जमोरिन ने इसका साथ अच्छा बर्ताव किया। वह यहाँ की कुछ वस्तुएँ—मसाला, कपड़ा इत्यादि—मोल लेकर घर लौट चला। माग में इसका साथ फिर वामार पट, कुछ लोग मर भी गये। दो वर्ष पश्चात् सन् १४८८ ई० में ये लोग लिस्बन पहुँचे।

सन् १५०२ ई० में यह वास जहाजों के साथ दुबारा भारतवर्ष में आया। लौटते समय इनके मुसलमानों के १३ सैदागरी जहाजों को भारत सागर में बन्दा कर लिया। सन् १५०२ ई० में यह पुर्तगाल लौट गया और वहाँ काउट आफ विडिन्करा बना दिया गया। इसके पश्चात् कुछ दिनों तक इसका पूर-वाह न हुई। इसी समय पुर्तगालियों

ने रुड़ द्वार भारत पर आक्रमण किया और गोआ तथा कर्नाटक ल लिया। अपने साथ वाणिज्य-व्यवहार क लिए भी इन लागों ने भारतवास्तियों का बाध्य किया। सच तो यह है कि उन दिनों भारत सागर क प्रत्येक ओर पुर्तगालवाले ही दिखाई पड़ते थ।

सन् १५२४ ई० में, २१ वर्ष क पश्चात्, राजा जॉन तृतीय ने इसका भाग्त में पुर्तगाल-राज्य का राजप्रतिनिधि बना दिया। दुर्भाग्यवश वास्को डि गामा का अधिक दिन तक यह सुख न मिल सका। सन् १५२५ ई० में काचीन में इसका देहान्त हो गया।

कृस्टोफर कोलम्बस

जन्म-१४४० ई० के लगभग, मृत्यु-१५०६ ई०

डामेनिको कोलम्बो = सुसाना

कृस्टोफर कोलम्बस (जन्म १४४०)	गिघाना (जन्म १४४८)	डार्वालामो (जन्म १४५०)	भर्मी (जन्म १४६४)	जेम्स ग्याकोसा (जन्म १४६८)
---------------------------------	-----------------------	---------------------------	----------------------	-------------------------------

कोलम्बस जिनवा नगर के एक ऊनी माल के कारीगर कोलम्बो का पुत्र था। उसका जन्म जिनवा में हुआ। कुछ लोगों का मत है कि उसका जन्म १४४७ ई० के लगभग हुआ। यहाँ उसने मार्का पोने का पुस्तक पढ़ी और उसको देश भ्रमण तथा नय स्थानों का पता लगाने की इच्छा बहुत ही प्रबल हुई। फिर क्या था, २४ वर्ष की अवस्था में ही पेरिस नगर में जाकर उसने ज्योतिष-शास्त्र और नौ विद्या का अध्ययन आरम्भ किया। इसी समय उसने पुर्तगाल के राजा हेनरी के बारे में सुना, पर दुर्भाग्य-वश सन् १४६३ में हेनरी का देहान्त हो गया था। उसने भूगोल की कई पुस्तकें भी पढ़ी और 'इमागा मुडा' ग्रन्थ को पढ़ते ही उसे भारत में पश्चिमी राह से पहुँचने की प्रबल इच्छा हुई, पर अर्थ और सामर्थ्य का अभाव



कोलम्बस

को अफ्रिका के पश्चिमी तट का हाल मालूम हो गया। वह कुछ समय तक अपना ससुराल में रहा। वहाँ उसने पुर्तगाल के नाविकों से बहुत कुछ सुना और सीखा। रोज का इच्छा बढ़ता ही गई। उसने साचा कि यदि एशिया में पूर्वी राह से पहुँच सकते हैं तो पश्चिमी मार्ग से भी पहुँच सकेंगे और एटलांटिक का पार करना असम्भव न होगा।

इटली का रहनेवाला टास्केनेली आकाश-विज्ञान का पण्डित था। कोलम्बस ने उसको पत्र लिखा। उसने इसको यह बताया कि पुर्तगाल का राजा भी पश्चिम और से भारत जान की राह का पता लगाना चाहता है। उसने इसका अपना भू-चित्र भी दे दिया। अब इसका नवीन जगत् का खोज का धुन बढ़ती ही गई।

एक दिन उसने कुछ वृक्षों का, जिनमें चिह्न लगे थे, और मुदा का एटलांटिक सागर में बहत पाया। इससे इसका विश्वास दृढ़ हो गया कि नई दुनिया पश्चिमी किनारे पर अवश्य हागी और वहाँ मनुष्य रहते होंगे। अब इसने एटलांटिक पार करने की ठान ली।

सन् १४८२ ई० में इसने पुर्तगाल के राजा जॉन द्वितीय से, सहायता के लिए, आवेदन किया। पर इस राजा ने चालाकी से अपने आदमियों को खोज के लिए भेज दिया। ये लोग डरपोक थे, इससे बिना कुछ किये थोड़े ही दिनों में लौट गये। राजा से सहायता न पाकर, दुःखित हो, कालम्बस

न अपने भाई का गर्भेडू रु राजा जनता ममक क पान भ ता पर समुद्रों डाकुओं ने यम का मय मामा नट लिया । भू-चित्र भा नष्ट हो गये । भू चित्र द्वारा धनवाने पड और राज के कार्य म चित्रम्य हान लगा ।

इसा अयमर पर कालम्बस न अपना दश स सहायता मांगी, किन्तु जिनोराजानों व नी कुछ सहायता न का । तब निराग शेरु उस्ता भय का जगता । राजा फर्डिनेड और रानी इसावता न इस यावता पर । वचार करन रु लिए कुछ विद्वानों से कहा, पर इन विद्वानों की ममक में काई बात न आई । भय तो कालम्बस का कुछ भी आशा न रहा । लोग टसकी देसी करने लगे । बचने भा उसको चिढाने लगे ।

पर पुर प्राह टल गये और इसावता न धन से सहायता करना स्वाकार किया । तीन जहाज मिले, लेकिन साथ जाने का कोई प्रस्तुत न हुआ । अन्त म घूम देने और धमकाने से १२० मनुष्य मिल गये । चलन का तैयारा हा गई । एक वर्ष के लिए पर्याप्त भाज्य पदार्थ ले लिये गये ।

रानी ने परदेशी राजा क नाम चिट्ठी लिख दी और इस आशा से, कि कालम्बस सब विधर्मियों का ईसाई बना मकेगा, उसे जाने की अनुमति दे दी । कालम्बस स कहा गया कि यदि वह वस्तुत कोई नया प्रदेश ढूँढ निकालेगा तो उसक धन में उसका भा दसवाँ भाग लगेगा और उसक वशजों का भी यही धन मिलता रहेगा, वह जिन प्रदेशों को ढूँढ निकालेगा

उनका राजप्रतिनिधि बना दिया जायगा और जल-सेना का 'एडमिरल' (सेनापति) भी बना दिया जायगा। यदि वह किसी नये प्रदेश का पता न लगा पायगा तो उसे कुछ न मिलेगा।

कालम्बस सान्ता मेरिया जहाज में बैठा और "पिन्ता" तथा "निना" जहाज के साथ ३ अगस्त सन् १४८२ ई० में पालस के निकट माल्ट्स से रवाना हुआ। इसके साथी पहल से ही डरते थे, अन्त में कनेरी द्वीप में टेनेरिफ ज्वालामुखी पर्वत का देखते ही घबरा उठे। उस डरपोक साधियाँ को लेकर चलना भी अपूर्व माहस का कार्य था। कालम्बस ने उनका हर तरह से समझाया। वह कभी तो उनसे कहता कि स्थल बहुत दूर नहीं है, कभी कहता कि अभी चले ही कितने मील हैं। कभी धन का आशा दिलाता, कभी उन्हें लज्जित करता कि वे कायर हैं और कार्य पूरा किये बिना ही लौट जाने से लोग उनका हँसा करगे। इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर उन्होंने सरगैसा सागर देखा। यहाँ समुद्रा घास दिखाई पड़ा और कुछ पक्षी भी दृष्टिगोचर हुए। इससे मबने सोचा कि भूमि बहुत दूर नहीं है। ये लोग रात दिन चलते ही गये, अन्त में बहुत दूर पर प्रकाश दिखाई पड़ा। फिर क्या था, जहाज में हलचल मच गई। फिसा ने कहा कि यह प्रकाश किसी दूसरे जहाज का है, और किसी कहा कि यह प्रकाश स्थल पर है। अन्त में रात का दो बजे स्थल स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ा। सब लोग सवेरा हाने की अपेक्षा में बैठे रहे।

२२ अस्तूबर १४९२ ई० को ये लोग सैन सैलेवडर द्वीप में उतरे। यह द्वीप लगभग २३ मील लम्बा और ७ मील चौड़ा है। नात्रिक आनन्द से नाच उठे, उन्होंने कालम्बस को छाती से लगा लिया। फिर ईश्वर का धन्यवाद देने के लिए सब घुटनों के बल बैठे। द्वीप में स्पेन का झण्डा गाड़ दिया गया। यहाँ के निवासी पहले तो बहुत डर, परन्तु इनका अपूर्व रूप, वेप और अस्त्र शस्त्र देखकर उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। इनमें विपत्ति की आशङ्का न देखकर वे इनसे वस्तुओं का आदान प्रदान करने लगे।

कालम्बस ने इन मनुष्यों के चार में अपने लडके से यह कहा था—“ये लोग जब समुद्र के किनारे पर मिले, निरस्त्र थे। इनके साथ कोई स्त्री न थी। पुरुष प्रायः ३० वर्ष के थे। इनका रङ्ग बादामी और कद मेंझाला था। बाल काले और कानों के ऊपर तक फैले हुए थे। रूपाल चौड़ा था। उन्होंने शरीर रँग लिया था और ये अस्त्रों का प्रयोग करना न जानते थे। नगी तलवार को जब उन्होंने देखा तो बहुत आश्चर्यान्वित हुए और उसका उल्टा, धार की ओर, पकड़ लिया। समुद्र-तट पर इनकी बहुत सी छोटी छोटी किश्तियाँ थीं।” इन लोगों ने सुग्गे पकड़-पकड़कर कालम्बस को दिये और धुनी हुई रुई भी दी। कालम्बस ने भी इनको घंटी, काँच की माला और लाल टोपियाँ दी थीं। इनकी भाषा कोई नहीं समझ सकता था पर ये इशार से बात करते थे।

ऐमेरिगो वेस्पूकी

जन्म-स्थान—फ्लोरेंस, मृत्यु-स्थान—सेविल

ऐमेरिगो वेस्पूकी का जन्म फ्लोरेंस नगर में, सन् १४५१ ई० में हुआ। ४६ वर्ष की अवस्था में कैस्टाइल के राजा का आजा से उठ भी कालम्बस की तरह एटलांटिक सागर पार करने का चला। अभी तक कालम्बस के दक्षिणी अमेरिका के राज निकालने का हाल किसी का मालूम नहीं हुआ था। ऐमेरिगो ने सन् १४९७ ई० में दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भाग का पता लगाया और यही इस देश का हूँद निकालने-वाला कहा गया। इसने किनारे किनारे उत्तर का ओर चलना चाहा और कुछ दिनों में गल्फ आफ मैक्सिको को पार करके उत्तरी अमेरिका का पता लगा लिया।

सन् १४९९ ई० में इसे दूसरी बार कैस्टाइल के राजा ने भेजा। अब का बार यह मेजील पहुँचा। इसने अब पुर्तगाल का नौकरी कर ली। सन् १५०१ ई० में दक्षिणी अमेरिका के किनारे किनारे यह दक्षिण का ओर चला और हार्न अन्वरीप के प्रायः निकट ही जा पहुँचा। इस खोज से ऐमेरिगा का ख्याति बढ गई। दोनों महाद्वीप, जो पनामा नहर निकालने से पहले एक थे, इसा के नाम से प्रसिद्ध हुए। उत्तरी,

मध्य और दक्षिणी अमेरिका एमेरिगो के नाम का ही अपभ्रंश है ।

कुछ दिनों के पश्चात् यह स्पेन के जल-विभाग का प्रधान नाविक बना दिया गया और कोलम्बस का सच्चा मित्र हो गया । सन् १५१२ ई० में इसका देहान्त हुआ ।



वास्को न्युनेज डी बल्बोवा

जन्म—सन १४७५ ई०

मृत्यु—सन १५१५ ई० के लगभग

साधारण मनुष्य अपने प्रयत्न से कैसे जगत् में प्रसिद्ध हो सकता है इसका उदाहरण न्युनेज डी बल्बोवा है। यह घर से निकाला हुआ बहुत ही दरिद्र पुरुष था। स्पेन के जरिस नगर में इसका घर था। इसने बहुत सा धन भी लिया था और यह महाजनों से पीछा छुड़ाना चाहता था, इसलिए जब हिस्पानियाला से कुछ स्पेन निवासी, कोलम्बस की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात्, जहाज पर जा रहे थे तब यह जहाज के मालमोदाम में छिप गया। जहाज छूटने पर कप्तान का ज्ञात हुआ कि बल्बोवा छिपकर भाग रहा है। इससे वह बहुत ही क्रुद्ध हुआ। उसने बल्बोवा को किसी द्वीप में उतार देना चाहा। परन्तु जहाज के मालमोदों के अनुरोध से उन्होंने उसे डेरियन में, जो अब पनामा के नाम से विख्यात है, उतार दिया।

यहाँ स्पेन निवासी आपस में लड़ रहे थे। जाते ही इन पर प्रभाव जमाकर यह इनका सदार हो गया। यहाँ के मूल-निवासा भी इसका सम्मान करने लगे और शान्ति स्थापित

हो गई। इमन यहाँ के एक देगा राजा करिटा की लडकी न ब्याह कर लिया। अब लोग इमका दक्षिण क रूममय देश का कहानियाँ मुनाने लग और इमने भी देग क पश्चिमी किनारे क प्रशान्त महासागर का नाम मुना। एक और देशी राजा कोमोंगर बल्वावा का मित्र हो गया था। इमा ने प्रथम बार बल्वावा से प्रशान्त महासागर की चर्चा की थी। २ सितम्बर सन् १५१३ ई० में इसी बात का परीक्षा क लिए यह एक ऊँच पहाड़ पर चढ़ने लगा। २५ सितम्बर सन् १५१३ ई० में इसने पश्चिम में वैसा ही एक सागर देगा जैसा स्पेन में यहाँ आते समय देगा था। साका पोर्तो का नाम तुम्ह स्मरण होगा। उसने इस महासागर का एशियाई किनारा देखा था और बल्वावा ने उसका पूर्वी किनारा देखा लिया। अभी तक ता लोगों का अमरिका के पूर्वी किनारे का और प्रशान्त महासागर का ही ज्ञान था, अब इनकी इस महाद्वाप क पश्चिमी किनारे का और प्रशान्त महासागर का भी ज्ञान हो गया। पर इतने ज्ञान से लोग कब सन्तुष्ट रह सकते थे।

बल्वावा की इस गोज ने स्पेन में हलचल मचा दी और जब इमने जहाज बनाने के लिए स्पेन-सरकार से कुछ सामान मागा, तो उसने तुरन्त सब सामान भेज दिया और कुछ सामान किनारे के बेस्ट इंडोज द्वाप पुत्र से भी आया। उसका इसने बड़ी सावधानी से जानवरी और मनुष्यों पर लादकर पश्चिमी तट पर पहुँचाया और वहाँ जहाज बनाया

जाते लगा। चहाज बन ही चुका था कि इसके शत्रु पेड्रारियम ने, जो स्पन-भरकार की ओर से यहाँ 'गवर्नर' था, डाह व मारे इसका हत्या करा दा।

उह मच है कि बल्लोवा अपना कार्य पूरा न कर सका परन्तु इमने औरा क लिए खोज का कार्य तो सुगम कर दिया।



सिनेस्टियन कैवट

जन्म—सन् १४७७ ई०, मृत्यु सन् १५५७ ई०

सिनेस्टियन कैवट का जन्म त्रिस्टल नगर में हुआ था। यह जॉन कैवट का दूसरा बेटा था।

जॉन कैवट जिनेवा का रहनेवाला था और वाणिज्य के लिए त्रिस्टल में आया था। इसने लैवेंट में व्यवसाय करते समय, एशिया के धन के विषय में, बहुत कुछ सुना था। यह ऐसे राजा की खोज में था जो इसके उद्देश्य को पूरा करने में सहायता करे। हम जिस समय की बात कहते हैं उस समय इंग्लैंड का राजा हेनरी सप्तम था। तुम्हें स्मरण होगा कि इस राजा ने कोलम्बस को सहायता नहीं दी थी और जब उसके नये नये देशों के पता लगाने का हाल सुना तो वह अपने व्यवहार पर बहुत लज्जित और दुःखित हुआ था। अब यह चाहता था कि किसी मनुष्य को आविष्कार के लिए भेजे। जब जॉन कैवट ने राजा से अपनी इच्छा प्रकट की तो उसने तुरन्त इसको इस कार्य के लिए अनुमति-पत्र दिया और उसमें स्पष्ट लिख दिया कि खोज इंग्लैंड के नाम पर की जाय और पता लगाये हुए देश से जो लाभ होगा वह जॉन कैवट और उसकी सन्तान को प्राप्त होगा, —

पाचवों हिस्सा राजा का मिलेगा। ऐसा अनुमति-पत्र पाकर जॉन कैबट अपने बेटे सिवस्टियन कैबट के साथ सन् १४९७ ई० में आयरलैंड के दक्षिण होता हुआ उत्तर-पश्चिम की ओर चल पड़ा। वह जानता था कि पृथ्वी गोल है इसलिए पश्चिम का राह में एशिया भी पहुँच सकते हैं। दक्षिण जाने का अनुमति न था, क्योंकि हैनरी सप्तम स्पेन से झगडा मालूम था न चाहता था। पूर्वा राह मार्को पोलो ने देखी ही थी और उसमें कठिनाइयों भी बहुत थीं। इस कारण कैबट ने पश्चिमी राह का ही पता लगाना चाहा।

इसका जहाज छोटा था और साथ में केवल १८ मनुष्य थे। ये लोग सेंट लॉरेंस नदी के मुहाने पर पहुँच गये, परन्तु इतने थोड़े मनुष्यों के साथ एक अनजान देश में उतरना निरापद न समझकर ये लोग त्रिस्टल लौट आये। तीन महाने में लौटने पर जब इन लोगों ने अपनी खोज का वर्णन किया तो हैनरी सप्तम बहुत सन्तुष्ट हुआ। उसने कैबट को बहुत सा पारितोषिक दिया। फिर दूसरी बार इसका संजने का तैयारी की। अब का बार कुछ अँगरेजी जहाज माल लाने के भेजे गये और बहुत से अँगरेज भी साथ ही लिये। ये लोग मई सन् १४९८ ई० में त्रिस्टल से दुबारा रवाना हुए और जहाज लेकर उत्तरी अमेरिका के किनारे पहुँचे। परन्तु ये लोग ज्यों ज्यों दक्षिण की ओर बढ़ते गये, इन्हें इस देश का अन्वेषण न मिला। इसका

पार करने की आगा घटती गई। बहुत दक्षिण में जाना मना था, इस कारण ये लोग लौट पड़े। इधर एशिया जाने का पश्चिमी राह भी इनका न मिली। अब तो हेनरी सप्तम बहुत असन्तुष्ट हुआ। फिर उसने तीसरी बार यात्रा करने में सहायता न की।

सन् १४८६ ई० में सिप्रमिटियन कैबट ने अपने पिता के कार्य को पूरा करना चाहा पर वह कृतकार्य न हो सका। केवल न्यू फाउंड लैंड का पता चला।

वह लिखता है कि यहाँ समुद्र मछलियों से भरा हुआ है, और ज्यों ज्यों उत्तर की ओर चलिए समुद्र में जहाज से भी बड़े बड़े पर्फ क सफेद ढोके तैरते देख पड़ते हैं।

सिप्रमिटियन कैबट, पिता के साथ, सेंट लारस क दक्षिण का यात्रा कर चुका था। इसलिए अब की बार वह उत्तर की ओर गया। पर यहाँ सदा अधिक होन के कारण इसके साग्री आगे चलना नहीं चाहते थे इसलिए विवश होकर ये लोग दक्षिण का ही ओर चलकर फ्लोरिडा तक पहुँचे और एशिया के मार्ग का पता लगाने लगे। परन्तु फिर भी इनका एशिया की राह न मिली।

जब हेनरी अष्टम गद्दी पर बैठा, कैबट एक बार फिर एशिया की राह की खोज में चला और ब्रेजील तक पहुँचकर हिस्पेनिओला और पोर्टो रिको होता हुआ घर लौट ।

सन् १५१६ ई० में उसने स्पेन का नौकरी कर ली, परन्तु आविष्कार का काय फिर भा पूरा न हुआ। सन् १५१७ ई० में यह फिर अंगरजों का और स लैब्रेडर गया और वहाँ से इंडिया का रास्ता में पहुँचा, परन्तु एशिया की राह फिर भी न मिली। इससे निरुत्साह होकर, स्पेन की नौकरी करके, यह भारत का तट भूमि का स्पेन का अधिकार में लाने का चेष्टा करना रहा। सन् १५४८ ई० में यह इंग्लैंड लौट आया। राजा एडवर्ड पष्ठ ने इसकी बातों से प्रसन्न होकर इसे १६६ पाउंड १३ शिलिंग ४ पेंस की पेंशन दे दी और इंग्लैंड का ई-पाइलट भी नियुक्त कर दिया।

एक नई कम्पनी मचट एडवेंचर्स के नाम से चल पड़ी। सिरेस्टियन कैवट उसका नायक बना। सन् १५५२ ई० में उत्तर की ओर कुछ जहाजों के साथ सिरेस्टियन चला। अब एशिया से व्यापार आरम्भ हो गया।


सन् १५५७ ई० में सिरेस्टियन कैवट का देहान्त हो गया। यद्यपि न तो इसे और न इसके पिता का ही एशिया के पश्चिमी समुद्रा मार्ग का पता चला, तो भी इनकी अधूरी खोजों ने दूसरों के लिये मार्ग सुगम कर दिया। इतना ही नहीं, इंग्लैंड का नई दुनिया के पूर्वी किनारे पर अधिकार जमाने का प्रथम अवसर भी इन्हीं लोगों ने दिया था।

फर्नैंडो डी मैगलहैस या मैगिलन

जन्म—सन् १४७० ई० के लगभग,

मृत्यु—सन् १५२१ ई०

मैगिलन का जन्म पुर्तगाल में हुआ। यह अच्छे कुल में जन्मा था और घोड़ी ही अवस्था में रानी का नौकर हो गया। बड़े होने पर इसने राजा इमैनुयेल का नौकरी कर ली। वास्को डि गामा के पश्चात् पुर्तगालवाले एशिया की ओर कई वार भेजे गये और मैगिलन ने भी इनके साथ ही लेना चाहा।

सन् १५०४ ई० में एस्मिदा ने, जो नये दूँडे गये देशों का वाइसराय होनेवाला था, मैगिलन को साथ ले लिया और कैप आफ गुड होप की राह वह एशिया की ओर चल पडा। सन् १५०६ ई० में यह भारत को छूता और छोड़ता हुआ सुमात्रा और मलका पहुँचा। फिर वहाँ से भारतवर्ष आया। यहाँ वह अल्युरुर्क का नौकरी करने लगा। सन् १५११ ई० में यह एक जहाज में कप्तान बनाकर मलका भेजा गया और वहाँ से सन् १५१२ ई० में पुर्तगाल लौट गया। वहाँ राजा से कुछ बातों में इसकी अनवम हो गई और इसने घर छोड़कर बाहर जाना चाहा। उद्देश्य यह भी था कि ऐटलांटिक को  करके मलका, जिसको स्पाइस आइलैंड भी कहते हैं,

पश्चि और वहाँ से सामान लाकर राजा का मनुष्ट कर। पर वह राजा से लड युक्त था और जब डमने मरना इच्छा प्रकट का तब राजा न महायता करना खाछा न किया। इस पर वह स्पेन क राजा चातम पञ्चम के पाम गया। उस पर पाँच जहाज २३२ मनुष्य और दो र्प क उपयुक्त साध पदार्थ का खाकार किया। मैगिलन का यह वता दिया गया कि पुतगाल मरकार का मार से पता लगाई हुई भूमि पर वह प्रतिकार न जमाय। हाँ, प्राप्त हुए अश क नामव भाग का तड अधिकारा जामा। मैगिलन ने फाल्स्वम के प्रारिकार का लाल मुना था। ब-रोवा के पैसिफिक महासागर क विषय का ज्ञान भी उसक हृदय में बैठा हुई था। उसने पैसिफिक को पार करने का निश्चय कर लिया। वह २० सितम्बर सन् १५१८ ० में स्पेन से खाना हुआ। उसक साथ भिन्न भिन्न दशों क लाग थे। कुछ ऐसे भा थे जो उसक कार्य म चित्र डालना चाहते थे। मैगिलन पुतगाल की ढूँढ निराली हुई भूमि में नहा जाना चाहता था। इमतिष्ठ उसने टेनेरिफ द्वाप म पश्चिम दक्षिण पश्चिम का राह ली। बहुवरी विपत्तियाँ का अतिक्रमण कर वह परनैम-युक्त क निकट पहुँचा और वहाँ म दक्षिणा अमेरिका क किनार किनार दक्षिण-पश्चिम चलते चलते रायो डो लाप्लेटा म सन् १५२० ई० म गया। वहाँ से वह फिर दक्षिण का और चला। इधर दा जहाजों के कप्तानों ने, जा पहले से हा विद्रोह क लिए प्रस्तुत थे, तीसरे

जहाज के कप्तान का भी अपना साथ देने के लिए धेर लिया । इसका पता लगते ही मंगिलन ने मुख्य विद्रोही सरदार का मरवा डाला । इससे सनसना छा गई । दो महीने तक य लोग सेंट जूलियन में रुके थ कि इनका पैटेगोनिया क निवासी दिखाई पडे । उनसे कुछ खाने का सामान मिलन की आशा इन लोगो को न रह गई था कि एक नङ्गा दैत्याकार मनुष्य दिखाई पडा । इसका मंगिलन ने अपने साथ ले लिया और दो उड़ण्ड विद्रोहियो का कुछ खाद्य पदार्थ क साथ वहाँ उतार दिया । इससे जहाज म शान्ति हो गई । पूर एक महीने के पश्चात्, २१ अक्तूबर सन् १५१६ ईस्वी को, मंगिलन ने उस जल-विभाजक का पता लगाया जिससे वह पैसिफिक महासागर पहुँच सकता था । इस जल विभाजक का नाम, इसी के नाम पर, स्ट्रेट आफ मंगिलन पडा । इस जल-मार्ग के दक्षिण में उसने एक अग्निशिरामय द्वीप देखा और इसी लिए इस द्वीप का नाम टियरा डेल फ्युगो रक्खा । टियरा डेल फ्युगो का अर्थ अग्निमय भूमि है । इसी मार्ग के उत्तरी किनारे की भूमि को उसने रमणीय बताया है, क्योंकि ऊँचे पर्वतों से बर्फ की नदी बहती हुई समुद्र म गिती है ।

सात दिन की कठिन यात्रा क पश्चात् २८ अक्तूबर सन् १५१६ ई० को वह पैसिफिक क तट पर पहुँचा । इधर इस मार्ग को पार करते समय एक जहाज डूब गया था और एक जहाज के नाविक साथ छोड़कर घर चले गये थे । अब केवल

उसका कुछ देश मनुष्य मिले। इन्होंने स्पेनवालों का भ्रम भगत का। य लोग मन्त्रिणा के राजा मोटिजुमा के दूत थे और इस बात का पता लगाने आय थे कि स्पेनवाले क्या चाहते हैं। उन के साथ फोर्टिस ने अपने दूत का वस्तुआ का आना; किया और इनके राजा से मिलना चाहा। आता - ,गति लने के लिए राजदूत राजा के निकट लौट गए। मोटिजुमा डरपोक था। इन विदेशियों का बन्दूक आना का हाल सुनते ही वह घबरा गया। उसने फोर्टिस के निकट सोने और चाँदी का भेंट भजा और अपने राजा का यह निम्न दिया कि इन विदेशियों का इस देश का दुर्गन्तवा का कहानी सुनाकर डरवा दे। पर उस भेंट का दरवा न फोर्टिस को लालच बढ गया। उसने राजधानी मन्त्रिसका मन्त्रणा को ठान ली। उससे इसके साथ डर गया। उनका समझा बुझाकर यह उत्तर का और चल पडा। अब इसने दरवा न डेरा डाला। यहाँ इसके पाम क्यूमा से कुछ और लोग आ गये। लगभग १५० मनुष्यों को यहाँ छोडकर यह ३५० स्पेनवालों और लगभग ६००० देश सिपाहियों के साथ मेन्त्रिको विजय करने को चला। तुमने बंगाल विजय और आर्कट का कहाना सुनी है। थोडे से अंगरज सिपाहियों के साथ क्लाइव ने किस प्रकार हिन्दुस्तानी सिपाहियों का लड़ाई की शिचा दी और उन्हें अपने कार्य के उपयुक्त बनाया। फोर्टिस ने भी इसी प्रकार देश

सिपाहियों को युद्ध-विद्या सिखा दी। ये लोग अपने राजा के अत्याचारों से ऊबे हुए थे, इससे इन्होंने कोर्टिस को लड़ाई में सहायता दी। ऐसी सेना के साथ कोर्टिस मेक्सिको की ओर बढ़ा। वह रास्ते में लोगों से सोना-चाँदी लेने लगा। जो लोग न देते थे उनसे लड़ता था और उनका पराजित कर उनका सर्वस्व छीन लेता था। यह समाचार जब मोटेजुमा के पास पहुँचता तब वह घबराकर अधिक सोना-चाँदी भेजता और कोर्टिस से कहला भेजता कि आगे न बढ़ो। लेकिन उमका कौन सुनता था? कोर्टिस विजयोन्माद से पागल हो रहा था। उसने इनके धर्म पर भी हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ता था त्यों त्यों देश ऊँचा प्रतीत होता जाता था और देश का प्राकृतिक सौन्दर्य भी बढ़ता जाता था। मोटेजुमा का दुर्भाग्य था कि इसी समय ज्वालामुखी पोपोकैटेपेटल का उद्गार हुआ। राजा इसका ईश्वर का अभिशाप समझने लगा। ईश्वर कोर्टिस अपने सिपाहियों के साथ सुन्दर मेक्सिको नगर में जा पहुँचा। राजा मोटेजुमा देव दुर्विपाक से घबराया हुआ तो था ही, कोर्टिस के आने के सवाब ने उसको और भी विकल कर दिया। विदेशियों का प्रसन्न करने के लिए आगे बढ़कर उसने उनका स्वागत किया। राज-कोष में जितना धन था, सब लाकर उसने कोर्टिस के पैरों पर रख दिया। पर कोर्टिस ने धूर्तता से मोटेजुमा का वन्दी कर लिया और यह कहला भेजा कि अब मेक्सिको पर स्पेन के राजा का अधिकार है।

कार्टिस इससे भा सन्तुष्ट न हुआ। उसने राजा से ईसाई धर्म का कहा। पर राजा अपने धर्म का पक्का था। उसने अपना धर्म न छोड़ा। इस पर क्रुद्ध होकर कार्टिस ने देश का देव-मन्दिर और मूर्तियों का तुडवा दिया। ऐसे कर्म का फल कब अच्छा होता है? उसके देशी सिपाही विगड खड़े हुए। उधर स्पेन के सिपाहियों का एक दल, जो कार्टिस का विपन्न म था, किनारे पर आ उतरा। अब दोनो ओर सँभालना कार्टिस के लिए कठिन हुआ। यह भगडा दस वर्ष तक होता रहा। अन्त में कार्टिस वृत्कार्य हुआ। सोने-चादी से लोगों के थैले भर गये, लेकिन कार्टिस का लोभ बढ़ता ही गया। कैलिफोर्निया का पता लगाने के लिए उसने मेक्सिको से स्पेननिवासियों का एक जत्था भेजा और आप भा इसका राज में लगा रहा। सन् १५४७ ई० में इसका देहान्त हा गया।

फ्रेंसिस्को पिजारो

जन्म—सन् १४७० ई०, मृत्यु—सन् १५४१ ई०

फ्रेंसिस्का पिजारो का जन्म स्पेन के ट्रुक्सिगो नगर में हुआ था। मूसरी की रगवाली करना इसका पया था। उसे नये देशों के धन से मालामाल होने की इच्छा का प्रकट था। इसके लिए इसने उलोवा का साथ कर लिया। कुछ दिनों तक पनामा में कृषक का कार्य करता रहा। इससे दक्षिणी देशों के धन के बारे में बड़ा अद्भुत ज्ञान सुना। अवसर प्राप्त होने पर यह इन देशों की खोज चाहता था। गती के कार्य से इसने पर्याप्त धन इकट्ठा कर लिया था। सन् १५२४ ई० में एक जहाज में सवार मनुष्यों के साथ यह रवाना हुआ। जहाज के साथ कुछ कष्ट मिला, खाने-पाने के सामान में भी कमी हुई। धन में विवश होकर पिजारो ने जहाज को एक छोटे द्वीप के किनारे लिये पनामा में लौटा दिया और जहाज के किनारे पर उतर पड़ा।

वहाँ जङ्गल ही जङ्गल था। मूसरी के जंगल में ही
 थे। जंगल में बहुत दिनों तक रहने के बाद
 में आया। यहाँवाली से इन बातों

के उम दश का पता लगा जहाँ पर्याप्त सोना था । ये लोग बड़ा कठिनाई के माध्य समुद्र तक रास्ता पा सक । जब ये बड़ा पहुँचे तो इन्होंने अपने जहाज का माल में लदा हुआ पाया । यह जहाज पनामा से माल ले आया था । इसी जहाज पर बैठकर ये लोग दक्षिण का श्रार चले । कुछ दिनों के बाद इन्होंने एक बड़ी बस्ता देखी । जब ये जहाज से उतरकर बस्ती की श्रार चलते गाँववाले डरकर भाग गये । कुछ देर बाद लौटकर इन पर इन्होंने आक्रमण कर दिया । मारे डर के त्त लग अपने जहाज पर लौट आये ।

जहाज भी टूट रहा था इसलिए आगे बढ़ना उचित न समझकर ये लोग पनामा लौट गये । जहाज की मरम्मत हो जाने पर दो और जहाज लेकर, १६० मनुष्यों के साथ, पिजारा फिर खाना हुआ । अब की बार यह जहाज में कुछ घाड़ भी लाया था । जब उम स्थान को पार कर लिया जहाँ ये लोग पहला बार पहुँचे थे, तो पिजारा जहाज से उतर गया और उसने जितना सोना लूटा था वह सब जहाज पर लादकर इस आशा से पनामा भेज दिया कि और लोग धन के लोभ से आ मिलेंगे । दूसरे जहाज दक्षिण का श्रार बढ़े और गैलो द्वीप को पार कर गये । यहाँ के निवासी शिचित्त प्रतात हुए, क्योंकि ये लोग क्रिस्ता पर पाल चढाय घूम रहे थे । पाल के चित्र और कारागरी का देखकर किसी को यह भ्रम नहीं हो सकता था कि ये लोग अशिचित्त हैं ।

जहाज क कप्तान ने इनमें से कुछ लोगों को पकड़ लिया । वह इनको अपनी भाषा सिग्याने लगा । कुछ दूर और चलकर वह पिजारेो के निकट लौट आया । इधर साथ पदाघा का फिर कमी हुई । पनामा को फिर एक जहाज भेजा गया । पिजारेो ने अब गैलो जाने का विचार किया, पर उसक साथी तैयार न हुए और बलवा होने का ही था कि पिजारेो ने सबको समझा बुझाकर साथ चलने का तैयार कर लिया । केवल घोडे से मनुष्य लौट गय ।

कुई महोन बाद एक जहाज पनामा से माल लादकर ले आया । अब का बार फिर ये लोग दक्षिण की ओर बढे और गुयाकिल बन्दरगाह म पहुँचे । कार्डिलग पर्वत का सुजला सुफला पश्चिमीय तट-भूमि का देगकर ये लोग बहुत ही आनन्दित हुए । यहावालों ने इन लोगों का फल, अनाज, लामा* और ऊँट देकर सन्तुष्ट किया । ये लोग कुछ और दक्षिण चलकर पनामा लौट गये । पिजारा अब स्पेन गया और वहाँ से राजा की अनुमति लेकर पनामा वापस आया । सन् १५३१ ई० म तीसरी बार १८० मनुष्य, कुछ घोडे और तीन जहाज लेकर यह पेरू की ओर चला । विपुवत रेखा क पास आते ही यह घोडो और आदमियो क साथ उतर पडा । उसने जहाजो को दक्षिण की ओर रवाना कर दिया ।

* दक्षिणी अमरिका का—ऊँट की जाति का—एक पशु, जिस पर व्यवसायी लोग माल लादते हैं ।

जब पिजारा मय जहाज क गुयाफिल तरु पहुँचा तब सब ने देश क अन्दर जान का विचार किया । सन् १५३० ई० में तब म कुछ दूर पर डरा डाला गया । कुछ लोगों को छाटकर पिजारा अन्दर का ओर चला । यहाँ उसने इन्का राजा अता हुआल्पा का नाम सुना था । इस राजा का राज्य आनकल पेरू के नाम से प्रसिद्ध है । यह बड़ा ही धनी राज्य था । पिजारा ने इसका लेना चाहा । राजधानी कैक्सामल्का एण्डीज पर्वत क दूसरी तरफ थी । पठार और पवन क पार करन पर ही कोई वहाँ पहुँच सकता था ।

पिजारा के साथी पहले पहल घबराये, पर धन क लोभ से आगे बढे । इन्का ने इनको सोने-चाँदा और ऊनी कपड़ों का भेंट दा, पर ये लोग आगे ही बढते गये और कैक्सामल्का राजधानी दिखाई पडा । सवाद पाकर इन्का स्वयं मिलने आया पर स्पेनवाले उस पर टूट पडे । वह बन्दी कर लिया गया । पिजारा ने अब इससे नगर का सब धन इकट्ठा करवाया, फिर इसका मरवा डाला ।

सन् १५३४ ई० में कज्को नगर भी स्पेनवालों क हाथ आया और धीरे धारे पेरू और चिली इन्हीं लोगों क हो गये ।

अता हुआल्पा का मृत्यु क पश्चात् नये इन्का ने बदला लेने की ठाना । पर स्पेन के सिपाही शिष्टित थे और मदया में भी अधिक थे, इसलिए बडे प्रमानान युद्ध के पश्चात् इन्का मारा गया । उसका एक सिपाही भी प्राण लेकर न भाग सका ।

स्पेनवालों ने दश का लूट लिया। कहा जाता है कि लूट के माल में दस या बारह, मनुष्य के कद की, सुवर्ण-मूर्तियाँ थीं। लूट के माल के ४८० हिस्से किये गये। हर मिपाहा के हिस्से में २५००० हजार रुपये आय।

पिजारा का भाई फर्नैंडा पिजारा भी बड़ा निर्दय था। इस लूट के कार्य में उसी ने अधिक हिस्सा लिया था।

गरीब निर्दयता का फल कब अच्छा होता है ? सन् १५४१ ई० में इसी के आदमियों ने इसका, ७० वर्ष का अवस्था में, मार डाला।



मर ह्यूग विलोवी

मृत्यु—सन् १५५४ ई०

बाना। तुम्हें माना पाला का किरसा याद हागा, कुबल-
हृत्वा क म्शामर देश का पता लगान क लिए उसने कैसे
कैसे फट प्नाय श और फिर प्रिम हेनरी ने जलमार्ग से
का र शर चीन पहुचने के लिए कैसे कैसे नाविको का म्वाज
क कार्य क लिए भेना था, अन्त में कैसे वास्का डि गामा उत्त-
गा अन्नरीप हाते हुए भारत म पहुचा था। पर उत्तर-
पूर्व का समुद्री राह से चीन पहुचने का किसी ने विचार नहीं
क्रिया था। हा, कैवट ने अवश्य इस राह क बार में
अगरजा का सुभाया था। यदि गोन के कार्य क लिए लोग
वाहर न निकलते तो यारोप क जिस नरुश का अब तुम अपन
सामने देखते हो वह सम्भवत ठीक ठाक न बना होता,
प्रियोपत उत्तरी मरहद का ठीक पता लगना तो असम्भव सा था।

तुमने मचेंट एंडवेचर्स कम्पनी का नाम किसी पिछले पाठ
म सुना है। इसी कम्पनी के अगुवा बनकर सर ह्यूग विलोवी
आंग कप्तान रिचर्ड चैंसलर सन् १५५३ ई० म उत्तर-पूर्व का
राह ढूँढने क लिए निकले। चलते समय इनका ईंगलिस्वान
क राजा एडवर्ड पष्ठ ने कैथ या चीन क राजा से मिलने के

लिए चिट्ठी दा और वह कह दिया कि किसी राजा से या उसकी प्रजा से न तो छेड़छाड़ करना और न किसी के राज्य में, बिना उमरु की अनुमति के, उतरना। उसने विदेशी राजाओं से भी कहला भजा कि यदि य अंगरेज नाविक मड्डूट में पड तो इन पर मनुष्याचित दया दिखाइएगा।

स्काटलैंड के उत्तर में शटलैंड द्वीप है। वहाँ इन नाविकों ने रुकना चाहा, पर आंधी चलने के कारण य वहाँ रुक न सक और नोफोर्टन में पहुँचे। इनको रास्ता नहीं मिल रहा था लेकिन भाग्य से नार्वे का एक मल्लाह छोटी सी किश्ती गेता हुआ दिखाई पडा। उसने इन लोगो को नार्वे के किनारे पर आने के लिए कहा। ये लोग तैयार हो गये और किनारे के फिशोर्ड्स के पास पहुँचे। इन फिशोर्ड्स की चट्टानें बहुत ऊँची और खड़ी दिखाई पडी। नदियाँ, जो समुद्र में गिर रही थीं, बहुत ही सुन्दर मालूम होती थीं। पहाडा पर घाँड़ रु पड खड थे और मल्लाहों की किश्तियाँ मछली मारने के लिए किनारे पर तैयार खडी थीं। इनमें से एक अच्छे मल्लाह को, रास्ता दिखाने के लिए, विलीवा ने साथ ले लिया।

य ज्यों ज्यों उत्तर की ओर बढ़ते थे त्यों त्यों दिन छोटा होता जाता था और जब य हैमरफेस्ट के निकट पहुँचे तो सूर्य केवल घंटे दो घंटे के लिए दिखाई पडा। इसको 'मिड नाइट-सून' कहते हैं। यहाँ रात्रि के समय मल्लाह लोग

क्रिश्चिया म धँडकर मछला पकड़ने के लिए निकलत हैं और पटे देर एट कर उजल से जय मछलियाँ निकलती हैं तब उनका पकड़ मड है।

यहा इमा समय दुभाग्य-वश, इतरा वेग स आधा घना (1) मीना का जहान किनारे से बहुत दूर हा गया और उका माघा रैसलर न नातूम अपने जहाज के माघ किधर जाता मरा। गिलीया न अय गाँव का उत्तरी हिस्सा पार कर जिया और यह नोवाजज्ला द्राप पर जा रुका। फिर वहाँ न मन्नुड का आर नैटा और सफेद सजुद का पार कर इन्डेड क किनार आया। अब जाड़े के दिन आय और इमा कड़ा मरी पड़ा कि इसक माघा ठिठुरकर मरने लगे। मनुड का पारी जम गाँव में जहान भी आया नहा बड़ मकाग था। उन १५५४ ई० क तगमग गिलीया के प्राय इमा जहान पर गूटे।

इस गिलीया को न पाकर रैसलर अपने माघिया समत लय-पैड म बारहा पड़ेगा। यहाँ इनको एक अद्भुत बात दिखा म पडा। क्या तुमने कभी ऐसा सुना है कि किसा इस न कुछ दिने तक रात्रि हा उ होता हा और भाकाग म मुर मरेंग ममकत रहत ही ? यह मसा हा स्थान था।

इस स्थान पर मिनन का निरपय गिलीया और रैसलर 1 पदव हा कर जिया था, पर कुछ दिने का प्रवाधा क बाद इस पैमन्कर ने गिलीया का आउ न देगा तब यह भाग

बडा। सर्दा का मौसम निकट था। ककुना निरापद न समझकर लोगों की भयात्पादक बातों का परवा न करके यह मफेद समुद्र में आ पहुँचा। यहाँ कुछ मन्नाह दिखाई पड। य इतन भयभीत र कि अपनी किरितयाँ के माय किनार पर भाग आय। अँगरेजों ने इनका बहुत समझाया और डाढस प्रैधाया। घाडे समय क पञ्चा इन पर उनका इतना विश्वास हा गया कि य इन विदेशियों क पैर चूमन को दोडे और इधर-उधर स इनक लिए प्रहुव सा राना ले आय, पर य किसी तरह अँगरेजों का माल लेने का तैयार न हुए। राजा की अनुमति क बिना दूसरा का माल लना दण्डनाय था। उन्हाने इन लोगों से अपने राजा क माय मिलने का आप्रह किया। मास्को नगर इम देग की राजधानी थी। यह नगर समुद्र-तट से दूर था। य बिना पहियाँ का गाडियों पर बैठकर राजधानी की ओर चले। एसी गाडियाँ को स्लेज कहते हैं। इस भू-भाग पर जय बर्फ बहुतायत से पडती है तब इन गाडियाँ को बारहसिध खींचते हैं।

एसी ही गाडियों म बैठकर कुछ दिनों म चँसलर, अपने साथियों समेत, मास्को के राजा क पास पहुँचा। राजा ने इन लोगों की बडी आवभगत की और चँसलर क आगमन तथा कुछ व्यापार के विषय म भी अँगरेज राजा क पास पत्र भेजा।

दूसरी बार सन् १५५५ ई० म चँसलर मध्य रूस की ओर चला। रूस से चीन के रास्ते का भी पता लगाने

क्रिश्चियाँ म बैठकर मछली पकड़ने के लिए निकलते हैं और घंटे दो घंटे के उजल में जब मछलियाँ निकलती हैं तब उनको पकड़ लेते हैं।

यहाँ इसा समय दुभाग्य वज, इतने वेग से आँधी चला कि विलीया का जहाज किनारे से बहुत दूर हो गया और जहाज भागा चँसलर ने मालूम अपने जहाज के साथ किधर चला गया। विलीया ने अब नावों का उत्तरी हिस्सा पार कर लिया और वह नोवाजेन्ला द्वीप पर जा रुका। फिर वहाँ से पश्चिम का द्वार लौटा और सफेद समुद्र का पार कर लैपलैंड के किनारे आया। अब जाड़े के दिन आये और ठाना रुता मरी पडा कि इसका मागी ठिठुरकर मरने लगे। समुद्र का पाना जम जाने से जहाज भी आगे नहा बढ़ सकता था। सन् १५५४ ई० के लगभग विलीया के प्राण इसा जहाज पर जूट।

इधर विलीया को न पाकर चँसलर अपने माधियों समेत लैपलैंड में बारडा पहुँचा। यहाँ इनको एक अद्भुत बात दिग्गइ पडा। क्या तुमने कभी एसा सुना है कि किसी देश में कुछ दिनों तक रात्रि हो न होवा हो और आकाश में सूर्य सर्वदा चमकत रहते हो ? यह एसा ही स्थान था।

इस स्थान पर मिलने का निश्चय विलीया और चँसलर ने पहले ही कर लिया था, पर कुछ दिनों का प्रतीक्षा के बाद अब चँसलर ने विलीया का आते न दंग तब वह भाग

पदा । सर्दी का मौसम निकट था । रुकना निरापद न समझकर लोगों का भयोपादक यात्री का परवाना करके, यह सफेद समुद्र में आ पहुँचा । यहाँ कुछ मन्नाइ दिग्गड़ पड़ । य इतन भयभीत थे कि अपना किशितियाँ क साथ किनारे पर भाग आय । अंगरेजों ने इनको बहुत समझाया और डाढ़स वैधाया । थोड़ा समय क पश्चात् इन पर उनका इतना विश्वास हो गया कि वे इन विदेशियों क पैर धूमने का दाँडे और इधर-उधर से इनक लिए बहुत सा खाना ल आये, पर वे किसी तरह अंगरेजों का माल लेने का तैयार न हुए । राजा की अनुमति क बिना दूसरों का माल लेना दण्डनीय था । उन्होंने इन लोगों से अपने राजा क साथ मिलने का आग्रह किया । मास्को नगर इस देश की राजधानी थी । यह नगर समुद्र-तट से दूर था । य बिना पहियों की गाड़ियों पर बैठकर राजधानी की ओर चले । एसी गाड़ियाँ का स्तेज करते हैं । इस भू-भाग पर जत्र बर्फ बहुतायत से पड़ती है तब इन गाड़ियों का वारहसिधे साचते हैं ।

एसी ही गाड़ियों में बैठकर कुछ दिनों में चंसलर, अपने साथियों समेत, मास्को के राजा क पास पहुँचा । राजा ने इन लोगों की बड़ा आवभगत की और चंसलर के आगमन तथा कुछ व्यापार क विषय में भी अंगरेज राजा क पास पत्र भेजा ।

दूसरी बार सन् १५५५ ई० में चंसलर म और चला । रूस चीन के रास्ते का

की अनुमति इसको मिल चुकी थी। चेंसलर अबकी बार रूस में ही रह गया। उसने अपन साधिया का वापस भज दिया।

मन् १५५६ ई० में तामरी बार प्रगरजा का एक दल चला। इन लोगों को लैपलैंड में निकट विर्नाया के जहाज का भ्रमोश मिला।

इस चेंसलर, मास्का के एक रानत को साथ लेकर, उत्तर-समुद्र का त्राव चल पडा। आय हुए जहाजा में इसने साल गौर हेल मछलियों का तेल मोम उन और कुछ जान-वग के सुन्दर ताल तथा कुछ सूत साथ ल लिया। अब यह इंगलैंड का ओर चल पडा। पर अबका बार इसका दो जहाज टव गये और तीसर का बहुत दिनों तक पता न चला। चाप जहाज में चेंसलर स्वयं था। स्टाटलैंड के किनारे आत हा वहाँ के डाकुओं ने चेंसलर का, सब माल छीन कर, मार डाला।



सर फ्रांसिस ड्रक

सर फ्रेंसिस ड्रेक

जन्म—सन् १५३९ ई०, मृत्यु-

सर फ्रेंसिस ड्रेक का जन्म टैविश्ट
अंगरज नाविकों में इसने सबसे पहला
क्रम का था। इसका पिता डिवनग्र
बादशाहशाह में इसने नाव चलाने का
सीखा था। फिर डोगर वैरु में एक
तक काम सीखता रहा। जब इंग्लैंड
कुछ हथियारों को लाने के लिए गया
साध था। इन हथियारों को फ्रेंच
वेस्ट इंडीज में स्पेन-निवासियों को देकर
ड्रेक का मुख्य कार्य था। इससे
लाभ होता था, क्योंकि स्पेनियों को
लेने को तैयार रहते थे। इंग्लैंड
थे। इसी व्यापार के लिए इंग्लैंड को
किनारे जा पहुँचे। स्पेन के राजा को
कि अंगरज लोग स्पेनवालों को हथियार
प्रेषकर बहुत सा धन इकट्ठा कर रहे हैं
और भी

हुआ कि

स्थाना म आना-नाना आरम्भ किया है। अब उसने यह घोषित कर दिया कि स्पेनवालों न तो अंगरेजों से कोई वस्तु खरादें और न उनका हाथ कुछ बचें।

इसा कारण हाकिस और ड्रेक तथा स्पेन के बीच लड़ाई छिड़ गई। ड्रेक वहाँ से किसी प्रकार प्राण बचाकर भाग निकला और इंग्लैंड पहुँचा। मार्ग में उसे बहुत कष्ट मिला। खाने पीने का सामान घट गया, अन्त में विवश होकर कुछ लोगों का एक द्वीप में उतार देना पड़ा। सन् १५६८ ई० में यह कर्नवाल पहुँचा। स्पेनवालों का अत्याचार का क्रिसे ड्रेक से सुनकर अंगरेज बहुत ही उत्तेजित हुए। उन्होंने हर तरह से ड्रेक की सहायता करने की इच्छा प्रकट की।

स्पेन और इंग्लैंड में अब तक मित्रता का भाव था, लेकिन ड्रेक की कहानियाँ सुनने के बाद दोनों जातियों में शत्रुता का भाव उत्पन्न हो गया। तुम्हें पेरू विजय की कथा का स्मरण होगा। वहाँ सेना-चाँदी इतना अधिक था कि स्पेनवाले जहाजों में भर भरकर पनामा भेज देते थे और वहाँ से स्पेन पर लादकर नॉर्वर डिडिआस्त में भेजते थे। यह नगर एटलांटिक महासागर के किनारे पर है। यहाँ पैसिफिक महासागर के जहाज नहीं आ सकते थे, माल पनामा में उतारना पड़ता था और वहाँ से मनुष्य या पशु ढा-ढोकर डरिंग स्पल-संयोजक के पूर्वी तट पर ले आते

थ। आज-कल पनामा नहर बन गई है और प्रशान्त महासागर से जहाज पटलाटिक महासागर में, कुछ ही घण्टों में, पहुँच सकते हैं।

ड्रेक ने उन जहाजों के बारे में, जो नौबर डिडिग्रैस से माल लादकर स्पेन ले जाते थे, सुना था। उन्हीं को उसने अपने अपमान का बदला लेना चाहा। मई १५७० ई० में दो जहाज और कुछ क्रिश्चियाँ साथ लेकर वह स्पेन की ओर चला और नौबर डिडिग्रैस जा पहुँचा। स्पेन देखा ही स्पेनवाले भाग गया। अब उसने स्पेन के अन्तर्गत को लूट लेना चाहा, पर दुर्भाग्यवश वह स्पेन के अन्तर्गत, अंगरेजों ने उसको जहाज पर पहुँचा दिया। स्पेन के अन्तर्गत कार्य बन्द न हुआ।

कुछ दिनों में ड्रेक अच्छा शेरवुड स्पेन के निवासी किर्मेरन लोगों से मेल कर लिए। उन्होंने अंगरेजों के कठोर व्यवहारों से बड़े हाँसुते हुए अंगरेजों को बर्बरता से चाहते थे। एक दिन उन्होंने ड्रेक को स्पेनवाले नौबर डिडिग्रैस में बन्दूकें मारने के बर्बर पाते ही ड्रेक ने थोड़े से अंगरेजों को प्रस्थान किया और रात में अंगरेजों को दुर्गम था, लेकिन देश के अन्तर्गत में सुगंध कर लिया और इस अन्तर्गत में चला। चलते चलते अंगरेजों ने अन्तर्गत

से वह पूर्व में अटलांटिक महासागर को और पश्चिम
प्रशान्त महासागर का दर सरुता था।

प्रशान्त महासागर को देखते ही, बल्वावा श्रेक
श्रेक के हृदय में जगत् की परिक्रमा करने का
पर जिस लूट के कार्य के लिए वह गया था वह पूरा
पाया। स्पेनवालों का उसके आगमन का पता लगा
था। फिर भी उम्मेद कई बार हमला करने की चपटा
अन्त में कुछ धन उसके हाथ लग गया। सन् १५७२ ई.
में वह घर वापस गया। जब अंगरेजों ने सुना कि श्रेक ने
प्रकार स्पेनवालों से बदला लिया है तो वे बहुत सन्तुष्ट हुए।
लेकिन रानी एलिजाबेथ ने उसके काम को पसन्द न किया।

सन् १५७७ ई० में श्रेक एक बार फिर रवाना हुआ और
रानी एलिजाबेथ ने भी अबकी बार स्पेनवालों से असन्तुष्ट
हाकर उसे कुछ रुपया दिया। १३ दिसम्बर सन् १५७७ ई०
में श्रेक मारको का और गया और जब वह वहाँ पहुँचा
उसका बहुत ही सुन्दर जल-वायु का अनुभव हुआ। जाड़े का
शुभु था। वर्षा हो रही थी, पेड़ हर-भर थे। अगूर, जैतून,
नारङ्गा और गहनूत चारा और दिसाई पडत थे, लेकिन अधिक
विलम्ब न कर ये लोग रूप बर्ड द्वीप-पुत्र में पहुँचे। यहाँ
इन्डान मदिरा से लदे हुए एक जहाज का पकड़ा। फिर
ये ज्यों ज्यों दक्षिण-पश्चिम में चलने लगे, हवा भी अत्यन्त बग
से नदी हुई मालूम होने लगा और अन्त में एक ऐसे स्थान

सं वत् पूर्व क पट्टगटिन् ताम्रमागर को और पश्चिम के प्रशान्त महासागर देन सकता था ।

प्रशान्त महासागर में दाखिले ही, बल्योवा के महेश, एक क हरय म जगत् क पारंगमा करन की प्रबल इच्छा हुई, एउ जिथ वत् के काय क लिए बह गया था वह पूरा न हो सता । अपनवालों का उसके आगमन का पता लग चुका था । फिर भा उमन कइ धार हमला करने को चेट्टा की । वत् न उछ धा उसके हाथ लग गया । सन् १५७२ ई० म वत् धर गाम गया । जब अँगरेजों न सुना कि ड्रेक ने इस प्रान्त की राजाला म बदला लिया है तो वे बहुत सन्तुष्ट हुए । ताकन राना एलिजाबथ ने उसके काम का पसन्द न किया ।

सन् १५७७ ई० म ड्रेक एक बार फिर रवाना हुआ और राना एलिजाबथ ने भी अबकी बार स्पेनवालों से अमन्तुष्ट हाकर उसे कुछ रुपया दिया । १३ दिसबर सन् १५७७ ई० में ड्रेक सांगको को और गया और जब वह वहाँ पहुँचा उसका बहुत ही सुन्दर जल-वायु का अनुभव हुआ । जाड़े का शुरुत था । वर्षा हो रही थी, पेड हरे-भर थे । अगूर, जैतून, नारङ्गी और गहतूत चारों ओर दिखाई पडते थे, लेकिन अधिक विलम्ब न कर ये लाग कप बर्डे द्वाप पुथ में पहुँचे । यता इन्होंने मदिरा से लदे हुए एक जहाज का पकडा । फिर ये ज्यो ज्यो दक्षिण पश्चिम में चलने लगे, हवा भी अत्य वेग से बहती हुई मालूम होन लगा और अन्त में एक ऐसे स्थान

में आ पहुँचे जहाँ हवा विन्कुल रुक गई और जहाज बहुत धीरे धीरे चलने लगा ।

तुमने शान्त कटिबन्ध का नाम सुना होगा । इसका विषुवत रेखा के पास डालड्रम भी कहत है । यहाँ हवा बहुत धीरे-धीरे चलती है । ड्रेक क जहाज डालड्रम में आ पहुँचे थे और हवा न चलने क कारण उम समय क, पाल लगे हुए, जहाज वेग से नहा चल सकते थे । जब य लोग और आगे बढे तो इनको फिर पृष्टि और आँधा का सामना करना पडा ।

आकाश में बिजली चमक रही थी और लगातार मेघ-गर्जन होता था । ५४ दिन क पश्चात् ये लोग ब्रेजील के तट पर पहुँचे । जब इन्होंने देखा कि यहाँ क निवासी इनक नाश के लिए तैयार बैठे हैं तो और दक्षिण की ओर चले और प्लेट नदी के मुहाने पर पहुँचे । यहाँ इनका स्वच्छ पानी मिला पर य लोग आगे बढते ही गये और मेंट जुलियन बन्दरगाह में पहुँच । यहाँ समुद्र में सील मछलियाँ बहुत दिरगई पडी और पेटेगोनिया के पठार में दैत्याकार मनुष्य देय पडे ।

ये लोग अँगरेजों से बहुत बडे थ । इनके शरीर पर कोई कपडा नहीं था । नाचते-कूदते य लोग अपने देश की वस्तुएँ—जैसे एमू चिडिया और उसके पर—लेकर परदेशियों के पाम आये । इन्होंने उनको यह सब दे दिया ।

परन्तु जब अँगरेज इनका कुछ देन लगे तो इन्होंने अपने हाथ से नहीं लिया किन्तु उनका भूमि पर गगने के लिए मकत किया ।

दो महीन तक सेंट जुलियन में रहकर ड्रेक कुल तीन जहाजों के साथ दक्षिणी अमरिका के घुब दक्षिण का ओर बढ़ा । यह जब मैगिलन जन-न्याजरू में पहुँचा तब इसने देखा कि पश्चिमी गढ़ बहुत टेढ़ा-मेढ़ी है और समुद्र भी कम गहरा नहीं है । यहाँ क किसी द्वीप में झाँके बहुत से पत्तों मिले । उन पत्तियों का इन्होंने, मारकर खाने के लिए, जहाज में भर लिया । जब ये लोग प्रशान्त महासागर में पहुँचे तो इनका एक जहाज आँधो से दूब गया और दूसरा घर वापस गया ।

ड्रेक एक ही जहाज के साथ उत्तर की ओर किनारे-किनारे चला और वालपगो पहुँचा । वहाँ सोन के माल से भर हुए एक जहाज का उम्ने गिरफ्तार कर लिया और वहाँ उतरकर लूटना आरम्भ किया । धन के लोभ से अँगरेज अब बार-बार जहाज से उतरने लग । इस तरह बहुत सा माल उनके हाथ लगा । जब ये पेरू के किनारे पर पहुँचे तो इन्हें कुछ लामा (एक प्रकार के ऊँट) भी मिले । उन्हें इन लोगों ने खाने के लिए जहाज पर लाद लिया । लामा में ड्रेक ने १० जहाज लूटे । आगे चलकर एक और स्पेनी जहाज का लूटा जिसमें इसको बहुत सा सोना और चाँदी मिली । लूट का सामान इतना हा गया था कि स्पेनवाले इन अँगरेजों के पत्रों शत्रु हो

गये थे और बहुत दिनों तक यहाँ ठहरना ड्रेक के लिए उचित न था। यह मँगिलन जल-संयोजक के रास्ते से भी नहीं लौट सकता था। यहाँ इसका शत्रु स्पेनवाले इसके लौटने की ही प्रतीक्षा मँ बैठे थे कि इसमें प्रशान्त महामागर के पार करने की ठानी, और उत्तर का ओर अनुकूल हवा के लिए चल दिया। टेड महीने चलन के बाद ड्रेक सानफ्रांसिस्को में पहुँचा।

अभी तक कार्ड यूरोप-निवासी यहाँ नहीं आया था। यहाँ के देगी लोगों ने इन अँगरेजों को देवता मानकर इनका प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। ड्रेक ने उस जगह का नाम नवीन गेलनियन रखा और एक खम्भा गाड़ दिया जिसे अपने आगमन की तिथि और समय लिख दिया तथा यह भी सूचित कर दिया कि यह स्थान अब अँगरेजों का है। महारानी एलिजाबेथ का चित्र भी वहाँ रख दिया। यहाँ से ढाई महीने के परवात् ड्रेक फिलिपाइन द्वीप पहुँचा और वहाँ से मोरको के लिए चल दिया। यहाँ के एक द्वीप के राजा ने इसकी बड़ी आवभगत की और इसे चावल, चीनी, कला, लौंग और मुर्गियाँ भेंट में दीं। इन द्वीपों को शाभा अपूर्व थी। लेकिन ड्रेक को घर लौटना था इसलिए इस सौन्दर्य का उपभोग करने के लिए वह यहाँ अधिक दिन तक न रुक सका और द्वीप-पुञ्ज के दुर्गम मार्गों से होकर वह जावा द्वीप में गया। वहाँ से सीधे उत्तमाशा अन्तरीप को ओर चला, फिर उसको पार करते हुए सिअरालियोन में पहुँचा। यहाँ से प्लीमथ की ओर

चला और सन् १५८० ई० में तीन वर्ष के पश्चात् वह घर पहुँचा। राना एलिजाबेथ बहुत सन्तुष्ट हुई। उसने इसको जटाज ही पर नाइट की उपाधि दी। सन् १५८५-८६ ई० में इमन राज का काम नहा किया, पर पश्चिमी द्वीप-समूह में जाकर ऊई द्वीप छीन लिये। सन् १५८७ ई० में इमने स्पेन में कंडा पर हमला किया और स्पेनवालों का कई बार युद्ध में परास्त किया।

तुमन स्पेनिश आर्मेडा (जहाजी बडा) का नाम सुना हागा। इस युद्ध में सफलता पाना भी इसी का कार्य था। सन् १५८८ ई० में यह पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया। फिर एक बार हाकिस के साथ पश्चिमी द्वीपसमूह में गया और जहान पर वामार पडा। सन् १५८५ ई० में, नौबर हिडिब्रास क बन्दरगार में, इमका देहान्त हो गया।

सर मार्टिन फ़ोविशर

जन्म--सन् १५३६ ई०, मृत्यु--सन् १५९४ ई०

उत्तरी-पच्छिमी राह से कैथे या चीन पहुँचने की क़ैद की इच्छा पूरी न हो पाई थी। उसके बाद भी कुछ दिनों तक ऐसा कोई नाविक नहीं हुआ जो उस कार्य को पूरा करता। विलोनी और चेसलर के बारे में तुम्हें याद होगा कि उत्तर-पूर्व की राह से भी वे कैथे नहीं पहुँच सकें थे। इस देश में जाने की आशा अब अँगरेजों ने प्रायः त्याग ही दी थी, पर सन् १५७४ ई० में जब सर हफ़े गिलवर्ट की किताब छपी और उसने लोगों के दिल पर यह बात अच्छी तरह से बैठा दी कि कैथे में उत्तर-पश्चिम की राह से पहुँचना असम्भव नहीं है, तो इंग्लैंड के कुछ सौदागरों ने मिलकर किसी ऐसे आदमी को भेजना चाहा जो इस कार्य को पूरा कर सके। सर मार्टिन फ़ोविशर तैयार हो गया।

यह एक अँगरेज नाविक था। इसका जन्म डॉनकैस्टर में हुआ था। बचपन से ही यह नौ-चालन के कार्य में लग गया था। तीन जहाजों के साथ सन् १५७६ ई० में डेप्टफ़ोर्ड से यह खाना हुआ। ब्रिटेन के उत्तरी हिस्से को पार करते हुए आर्कनीज और शटलड द्वीप-पुञ्ज से होता हुआ यह सीधा

पश्चिम की ओर चला। एक मास क परचान् इसे प्रीनलैंड दृष्टिगोचर हुआ। उस बर्फ से ढकी भूमि के पार उतरना अमम्भव था, इसलिए यह, सायिया महित, लैब्रेडर की ओर चला। समुद्र में उगवती ठण्डी धारा थी। बड़ी बड़ी साल और हेल मछलियाँ दिग्गई पडती थीं। पहाड के जैसे बर्फ क टुकटे तैरते हुए दिग्गई पडते थे। ये बर्फ के पहाड स्वाद में माठे थे लेकिन समुद्र का पानी बहुत गारा था। कहीं कहीं बर्फ क टुकड़े टूटकर इतने बंग से गिरते थे कि उनके शब्द से कान बहर हो जात थे। हेल मछलियाँ इतने भयङ्कर शब्द क साथ नाक से पानी का फव्वारा छोटती थी कि यदि कोई जहाज सामने पड जाय तो प्रिना डूबे न बचे। कभी कभी तो जब ये पानी के ऊपर आती थी तो दूर से झांटे-मांटे द्वीप सी प्रतीत होती थीं।

प्रोविशर क जहाज कुछ दिनों में एक द्वीप क पास पहुँचे। यहाँ इनका किनारे पर घोडे में मतुप्य दिग्गई पडे। ये लोग प्रोविशर क जहाज देखने आये थे। ये तावारियों की तरह लम्बे थे, इनका रङ्ग भूरा, बाल काले, नाक चिपटी और चेहरा फैला हुआ था। ये साल मछली का चमडा पहने हुए थे। इनका किशितियाँ किनारे पर रखी थीं जो सील मछली के चमडे से मढी हुई थीं।

प्रोविशर का दल लैब्रेडर में उतरना चाहता था, परन्तु जब बर्फ के टुकड़े टूटकर किनारे से समुद्र में गिरने लगे

तो वह जल्दा वहाँ से वापस चला और बैफिनलड के निकट फ्रोविशर खाड़ी में पहुँचा। निकट की भूमि को एशिया समझकर य लोग किनार उतरे। वहाँ की ऊँची भूमि से इन्होंने समुद्र में कुछ काली काली वस्तुओं को तैरते देखा। जब वे निकट आई तो देखा कि ये मछलियाँ नहीं, बल्कि चमड़े से मढ़ी हुई किरतियाँ हैं। किरती पर से उतरने पर इन लोगों को घण्टी बजाकर और शीशे में अपना प्रतिबिम्ब दिखाकर आश्चर्यान्वित किया जाने लगा। जब इनका विश्वास हो गया तो अँगरेजों ने इनको यही घण्टियाँ और शीशे दे दिये। ये एस्किमो लोग थे। एस्किमो लोगों ने भी भालुओं और सील मछलियों के चमड़े दिये। फ्रोविशर ने इनमें से एक मनुष्य को पकड़कर इंग्लैंड ले जाना चाहा। बहुत चालाकी से उसने एक को पकड़ लिया। पहले तो कोई पाम नहीं आया लेकिन फ्रोविशर ने जहाज पर बैठे बैठे घण्टी बजाना आरम्भ किया और ज्यों ही एक एस्किमो छोटी सी किरती लेकर निकट आया, हाथ पकड़कर उमको खींच लिया। जब उम एस्किमो ने देखा कि वह कैद हो गया है तो भारे क्रोध के दाँतों से अपनी जीभ काटने लगा। पर फ्रोविशर ने उसको नहीं छोड़ा। तब जो चार-पाँच अँगरेज किनारे पर उतरे थे उनको इन एस्किमो लोगों ने पकड़कर न मालूम कहाँ छिपा दिया।

सन् १५७६ ई० में फ्रोविशर इस कैदी के साथ—भालु और सील मछली के चमड़े और एक काला पत्थर लेकर—

इंग्लैंड पत्था। कंधे का रास्ता मिलने की खबर पाकर लोग बहुत सन्तुष्ट हुए। उस काले पत्थर की परीक्षा क परचात् च्य आको यह ज्ञात हुआ कि इसमें सोना है तो उनका लोभ बढन बढा। उन्होंने दुवारा प्रोविशर का सन् १५७७ ई० म गये भना। अबका वार भी यह आस-पास क दो एक स्थानों हा पता लगाकर, कुछ काले पत्थरों का इरुट्टा करक, इंग्लैंड का और चल दिया। रानी एलिजाबेथ बहुत मन्तुष्ट हुई। तीसरी वार सन् १५७८ ई० में प्रोविशर खाना हुआ। जब फ्रांसिस ग्राडो के पास आया तब आंधी इतने वेग से चली कि प्रोविशर का जहाज हडमन जल सयोजक में जा पहुँचा और कंधे जाने का ठीक मार्ग मिल गया, लेकिन मासमी आंधी के कारण ये लोग घर को लौट चले। वहाँ पहुँचते ही इनको ज्ञात हुआ कि वे काले पत्थर किसी काम के नहीं हैं। अब इनका चौथी वार कौन भेजता ? सोना मिलने का भी कोई आशा नहीं थी और चीन पहुँचने के कार्य में भी उन्नति न हुई थी। सन् १५८५ म प्रोविशर ने ड्रेक क साथ पश्चिमी द्वीपसमूह में कार्य किया और सन् १५८८ ई० म वह स्पेनिश आमेडा क युद्ध में भी था। सन् १५९४ में ब्रेस्ट का दुर्ग लेते समय वह मारा गया।



सर वाल्टर रेले



मंगो पार्क



डेविड लिविंग्स्टन

सर वाल्टर रैले

जन्म—सन् १५३२ ई०, मृत्यु—सन् १६१८ ई०

फ्लोरिडा की मृत्यु के पश्चात् जॉन डेविस ने उत्तरी अमेरिका में डेविस जल-मयोजक का पता लगाया। वह ग्रॉनलैंड और जीर्लैंड हाते हुए ७३ उत्तरी अक्षांश तक पहुँचा। इसके पश्चात् उसने उत्तरी-पश्चिमी राह का पता लगाना छोड़ दिया। पर कई बार वह पूर्वी द्वीप-समूह में गया और जापानी जल-दस्युओं ने मलका के निकट उसे मार डाला।

हेनरी हडसन ने इसके पश्चात् हडसन जल-सयाजक का पता लगाया। फिर उत्तरी अमेरिका के पूर्वी किनारे को छूते हुए वह ४० उत्तरी अक्षांश में पहुँचा। यहाँ जो नदी गिरती है उसका नाम उसने हडसन नदी रक्खा। सन् १६१० ई० में वह हडसन की खाड़ी में पहुँचा। खाने का सामान चुक जाने पर उसका विवश होकर लौटना पड़ा। रास्ते में साथियों ने उमको और उसके पुत्र को छोटी सी किरती में उतार दिया। कोई नहीं जानता कि फिर उनका क्या हुआ।

विलियम बैफिन ने सन् १६१२ ई० में इस कार्य को उठाया पर किसी देश का पता नहीं लगा। सन् १६१६ ई० में उसने बैफिन की खाड़ी का पता लगाया। फिर उत्तर-पश्चिम की राह

का हूँटा जाना घन्द हो गया। मन् १६२१ ई० में आरमज के पाम पुर्वगालियाँ से लडते लडते वह मर गया।

मन् १५७८ ई० में अनुमति पत्र लेकर सर हफ्रे गिलबर्ट ने न्यूफाउडलैंड को अंगरजों के अधिकार में कर लिया। इस द्वाप क पास उत्तरी ठण्ढी धारा में, जिमको लैब्रेडर धारा कहते हैं दक्षिणी मेक्मको की गर्म धारा आ मिलती है और कुहरा छा जाता है। जहाजों के लिए यह स्थान निरापद नहीं है। यहाँ फॉड मछलियाँ पाई जाती हैं। न्यूफाउडलैंड में चाँदी और अन्य रानिज पदार्थ मिलने की बहुत आशा थी। थोड़ी सी चाँदी इसको मिली। राने पीने के लिए यहाँ के लोगो १ चपातियाँ और मदिरा दी। फल, घाम और तारपीन का तेल बहुत मिला। किन्तु गिलबर्ट के नाविक आपे से बाहर हो रहे थे और अत्याचार भी अधिक हो गया था।

इसने मन् १५७४ ई० में चीन जाने के रास्ते के बारे में लिखा था और लोगो को उत्तेजित किया था। दूसरी बार जब यह अमरिका से लौट रहा था, इसका जहाज डूब गया। इमक सौतेले भाई सर वाल्टर रले ने न्यूफाउडलैंड लैते समय इसका बडी म्हायता का थी।

सर वाल्टर रले का जन्म डिबेनशायर के हेयास नगर में मन् १५३२ ई० में हुआ था। बरजीनिया में इसने आदमियों का एक टुकड़ी भेजी और कुआँरी रानी एलिजाबेथ के नाम से इसको प्रसिद्ध किया। रले न इसी देश से पहले अपने

देश में तम्बाकू और आलू पहुँचाया। इसने एल्टोरेडो के विषय में यह सुना था कि वह सोने-चाँदी से भरा पड़ा है। वह अब गायना के नाम से विख्यात है। इसी देश की रोज में रेले निकला। ओरीनोको नदी में इसने छोटी छोटी किशियाँ डाल दीं। जहाजों को पीछे छोड़कर यह अग्रसर हुआ। वर्षा सूब हो रही थी। नदी में बाढ़ आ गई थी। उस देश के लोगों ने पेड़ों पर अपने झोंपड़े इसलिए बना रखे थे कि बाढ़ में बह न जायें। यहाँ गर्मी भी बहुत है। रेले के साथी घबरा गये थे। लेकिन जब ये किनारे पर उतरे तो देश बहुत सुन्दर प्रतीत हुआ। पेड़ फले हुए थे और रङ्गीन चिड़ियाँ इधर-उधर उड़ रही थीं। यहाँ के निवासी पुर्तगालवालों से बहुत घबराते थे। जब उन्होंने सुना कि ये पुर्तगाल क रहने-वाले नहीं हैं तो उन्होंने इनको मदिरा, फल, चिड़ियाँ, कछुआ के अड़े और रोटियाँ ला दीं। अब गायना पर्यट का भी पता लग गया। बड़े भयङ्कर भरने और ऊँची ऊँची घास दिग्गई पडी। हिरन चर रहे थे। पेड़ों पर बैठकर पत्ती सुरीली बोलियाँ बोल रहे थे। इस स्थान को यहाँ पर लैनोस कहते हैं। दक्षिणी अमेरिका में यह बड़ी अच्छी जगह है। लैनोस से बड़े बड़े पत्थर के टुकड़े साथ लेकर रेले घर की ओर वापस चला। रास्ते में इसको ट्रिनिडाड द्वीप मिला।

सन् १६०३ ई० में रेले से जेम्स प्रथम का झगडा हो गया। उसने रेले को कैद कर लिया। पर सन् १६१७ ई० में

यह छोड़ दिया गया, क्योंकि राजा को इसने गायना से सोना और चादा ला देने की आशा दिलाई थी। राजा ने स्पेनवालों से न लड़ने के लिए भी बार बार इससे कह दिया था। पर रत्ने न वहाँ जाते ही स्पेनवालों से भगडा कर लिया। यह समाचार पाकर राजा जेम्स ने स्पेनवालों को सन्तुष्ट करने के लिए इसे मरवा डाला।

रेलें ऊँचा पुरा धीर पुरुष था पर था बड़ा धमण्डा। कहा जाता है कि बुद्धिमान्, चरित्रवान् और उत्साही पुरुषों में यह अद्वितीय था। रानी एलिजाबेथ का यह प्रिय सदस्य था। एक बार रानी वर्षा के पश्चात् टहलने के लिए घर से निकली तो रास्ते में उमको कुछ कीचड़ मिला। रानी एलिजाबेथ अपने जूते का बचाने के लिए वहाँ रुकी हो गई। रेलें रानी से मिलने के लिए आया हुआ था। उमने बिना सोच-विचार के अपना नया कोट वहाँ फँसा दिया और रानी पार हो गई। रेलें के इस व्यवहार पर वह बहुत सन्तुष्ट हुई और सभी से मृत्यु-पर्यन्त रेलें रानी के प्रिय पात्रों में गिना जाने लगा।

जेम्स कर्टियर

जन्म—सन् १४९४ ई०, मृत्यु—सन् १५५५ ई०

जिम प्रकार अंगरजों की ओर से कैबट, प्रोविशर, डेविस, हबमन आदि नाविक उत्तरी अमेरिका के उत्तरी भाग की खोज में लग हुए थे उर्मी प्रकार फ्रांसीसी भी अपने नाविकों को इसी कार्य के लिए भजते रहे। फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम ने जेम्स कर्टियर को सन् १५३४ ई० में भजा। जेम्स का जन्म सेंट मोलो में हुआ था। वह न्यूफाउण्डलैंड के निरुद्ध पहुँचा। यहाँ पर उसने एक द्वीप में बहुत सी चिड़ियाँ देखीं। इन चिड़ियों की खोज में सफेद भालू भी समुद्र में तैर रहे थे। उस, इन्हा चिड़ियों और भालुओं का शिकार फ्रांसीसियों ने किया। फिर न्यूफाउण्डलैंड के उत्तरी किनारे से हाते हुए जेम्स ने वेली जल-संयोजक का पता लगाया। इसके बाद वह प्रिंस एडवर्ड द्वीप तक पहुँचा।

यह द्वीप बहुत ही सुन्दर था। पेड़ों के पत्ते हर रङ्ग के थे। सुगन्ध चारों ओर फैल रही थी और पेड़ों में अनेक प्रकार के बेर लगे हुए थे। गर्मी बहुत ही अधिक थी। ऋतु न थी। इसलिए कर्टियर फिर उत्तरी राह से

फ्रॉम लौट गया। चलने के पूर्व न्यू ब्रम्बिक से इमने यहाँ क दो मनुष्यों का माग ले लिया।

मन् १५३५ इ० म कर्टियर फिर लंब्रेडर के किनार आया और अत्र का वार न्यू ब्रम्बिक क उन दोनों आदमियों ने, तिनको कर्टियर फ्रॉम मे ले गया था, रास्ता बताने में बहुत सहायता दी। इन्होंने कर्टियर को सेंट लारेंस की गन्ध म देश क अन्तर जाने को कहा। कर्टियर चल पडा। गन्ध म उमने बहुत से अद्भुत जल-जन्तुओं को देखा। इनको अंगरना म बालग्स कहते हैं। ऐसे जानवर प्राय ठण्ड समुद्र म ही पाये जाते हैं।

चलते चलते कर्टियर अपने साथियों के साथ सेंट लारेंस नदा क मुहाने पर आ गया। उमने समझा कि एशिया जाने का रास्ता मिल गया है। परन्तु ज्यों ज्यों वह अन्दर की वार बढ़ता गया, उमको पानी मीठा मालूम होता गया। अभी तक लोग यही जानते थे कि एशिया और योरप के बीच में सारा समुद्र है, माठा नहीं।

अत्र वह क्षेत्र पहुँचा और वहाँ अपने बडे बडे जहाजों का छोडकर छोटी छोटी नावों में मांट्रील गया। मांट्रील माटम्नोयल शब्द मे बना है। मांटम्नायल का अर्थ राज-पर्वत है। यह छोटा सा गाँव पहाड पर बसा था। यहाँ से फिर ये लोग लौटे और रास्ते में, सर्दी के कारण, बहुत से बीमार पडे और मर गये। अबकी वार ये लोग बहुत से

अमेरिका-निवासियों का अपने साथ ले आये और न्यूफाउण्डलैंड के दक्षिणी रास्ते से गये। इस रास्ते को कैंबट जल-संयोजक कहते हैं। कैंबट ने ही पहले इसका पता लगाया था।

सन् १५४१ ई० में फिर अन्तिम बार कर्टियर ने सेंट लारेंस नदी में पैर रक्खा। यहाँ बेवेरु का किला बनवाया परन्तु मांट्रील के पश्चिम की ओर इतने भरने थे कि आगे बढ़ना असम्भव हो गया। अतः यह सन् १५४२ ई० में फ्रांस वापस आ गया। सन् १५५५ ई० में इसका देहान्त हो गया।

1

2 1

डमने शैप्लेन भील का पता लगाया । इसके परचात् शैप्लेन कनाडा म आता र्हा । डमन चॉडियर जल-प्रपात और ओटावा का पता लगाया । मन् १६१५ ई० मे इसने जार्जियन का खाडी और हूरन भील का पता लगाया । फिर बर्ता से हूरन क निकट क कुल अमरिकावाला क साथ इसी अटारिया भीत को पार किया । इन मनुष्या क विपत्ती दल ने डमको घायल किया और यह बचेरेक लौट गया ।

यागवानो मे शैप्लेन ही पहला मनुष्य था जिमने अमेरिका क अन्दर भीनों देशों और मनुष्यो का पता लगाया । मन् १६२० ई० म यह कनाडा का गवर्नर नियुक्त किया गया । यहाँ डमने अपनी जल यात्राओं क रिपय मे एक प्रबन्ध लिया । मन् १६३५ ई० मे डमका देहान्त हो गया ।



मगो पार्क

जन्म—मन् १७७१ ई०, मृत्यु—सन् १८०६ ई०

अफ्रिका के समुद्री किनार की भूमि का पता तो थारप-
वाला ने लगा ही लिया था पर अन्दर जाने का साहस बहुत
घोट वेगो ने किया था। जैसे विपुवत रग्गा के पार किने जाने
के पहले समुद्र के विषय में बहुत अद्भुत और भयङ्कर कथा-
नियाँ रची गई थीं वैसे ही इस देश के भीतरी हिस्से के बारे
में भी बड़ा भयङ्कर कथा सुनने में आता था। वास्तव में य
हिस्से ठीक भी थे। देश या तो उजाड़ गण्डों से भरा है या
जङ्गलों से। यहाँ पशु भी बहुत भयङ्कर हैं और अमभ्य नर-
भन्का की अधिकता है जिनके मारे लोग भीतरी हिस्से तक
नहीं पहुँच सके थे। इसी से अब तक अफ्रिका का अज्ञात
देश कहते थे। जो देश एक साहसी पुरुष देश के अन्दर गया
भी उनका फिर पता न चला। ऐसे देश में रोज का काम
हाना और सहा सही हाल जानना बड़ा ही कठिन है।

स्कॉटलैंड का रहनेवाला एक डाक्टर बड़ा साहसी था।
यह पूर्वी द्वीप समूह में भी हा आया था। इसने अफ्रिका
के अन्दर के देशों का पता लगाना चाहा। इसका नाम
मगो पार्क था। इसका जन्म सेलकैक के निकट फाउल

शीतल म दृष्टा था । इमर एटिनवरा विश्वविद्यालय म शिक्षा पार्क थी ।

सन् १७६५ ई० में यह अफ्रिका क परिणाम किनारे की ओर नाइजर नदी का पना लगाने की इच्छा म, चला । अभा तक लोगों का यही विश्वास था कि नाइजर नदी पश्चिम का ओर बहती है । नरुग म दयन म नुम्हे ज्ञान हो जायगा कि गान करनेवाली न हम लागी का कितना बडा भ्रम र किया है ।

घर स उलन क एक महीना पश्चात् मगो पार्क में पिया नदी क मुहान पर प, चा । यह नदी गहरी था । कागड भी डमम बहता था । इमर किनारे पेड गड घ जिनका जड काटा ता पानी म डबा थीं और रुहा निकती था । उनम मगर और टिपापोटेमम भरे पडे घ । एसी नदी म मगो पार्क न अपनी किशती उनी । पूर्व की ओर चलन चलत यह पिसैनिया म पहुँचा । यह अगरेजों के माल इरुट्टा करने की जगह थी । यहाँ सोने और हाथोदात का ढेर लगा था । निम्ना क लिए यहाँ हजगी भी इरुट्टा किय जाते थे । इम देश की भाषा सीरने क लिए यह यहाँ रुक गया, पर बीमार पड गया । बरसात का मौसम आ गया था । यहा दिन मे बहुत ही गरमी पडती है । जब धूल से भरी टुड आधा चलने लगती है तो दम घुटने लगता है । तारिग इतनी तेजा से होती है मानों आकाश टूटा पडता हा । मेघ गर्जन भी

भयानक है। रात्रि के समय मटक जैलन लगते हैं। लोमडियाँ और लकड़वाग्न इतने जोर से चिल्लाने हैं कि किमी नये आत्मों के लिए यहाँ थोड़ी देर भी ठहरना भयावह होता है।

उस प्रान्त में परमाणु गर्मियों में होती है और जाटे में सगा पड़ता है। दो या मौसम होते हैं। मगो पार्क सूखे के दिना में अन्धा हो गया और पिसैनिया से खाना हुआ। इमने दो हथियारों का अपने साथ ले लिया। सामान लाया के लिए दो घोड़े और दो रथ भी इमने ले लिये। कुछ दूर चलकर इमके साथ न्य और हथिया आ मिले। ये लोग मदाना आ पहुँचे। नकरी में देखो, यह अरब का मदीना नहीं है। मदीना के राजा ने इसका आगे बढ़ने की राय न दी, लेकिन इमने जब आप्रह किया तो उमने एक पथ प्रदर्शक साथ कर दिया। ये लोग कुनार पहुँचे। यहाँ इन्होंने देशों लोगों का कुशती लडते देखा। मगो पार्क के माथा अब आगे बढ़ना नहीं चाहते थे, इसलिए एक पत्थर पर मन्त्र फूँककर उस पर चूकते थे और फिर उसा पत्थर का मार्ग का रत्ता के लिए अपने सामने फेंक देते थे। तीन बार ऐसा करने पर उनके हृदय में इतना विश्वास हो जाता था कि वे नाचते कूदते आगे बढ़ते थे। अब इनके सामने फेल्मी नदी पड़ी। यह मेनीगाल नदी की महायक नदी है। नदी पार उस प्रदेश की राजधानी थी। मगो पार्क वहाँ के राजा से जा मिला और उसे अपनी छतरी और कोट दे दिया। राजा

सन्तुष्ट हो गया। मगो पार्क से रानियों ने भी बहुत स प्रश्न किये। इसका गोरा गङ्ग देवकर रानियों को बडा अचम्भा हुआ। उन्होंने कहा कि इसकी मा ने जन्म के पश्चात् इसको दूध म डुवा दिया था, इसी से यह गोरा है।

यहाँ से छुट्टी पाकर मगो पार्क आगे बढा। अब उसे सेनीगाल नदी दिखाई पडी। यह नदी इतनी गहरी न थी जितनी कि गबिया। चल स्वच्छ था। नदी मन्द गति से गतीली और पथरीली भूमि पर बहती थी। आसपास की भूमि ऊँची थी और उस पर हरी हरी घास थी। इसके निकट ही खेती होता थी। इस नदी का पार करके मगो पार्क कैमन राज्य म पहुँचा। यहाँ क राजा ने मगो पार्क की आवभगत की और आगे बढने म इसकी सहायता की। कार्टा पहुँचने पर इस गोरे आदमी को देखने के लिए बार बार लोग आन लगे। यहाँ से यह मूर लोगो की राजधानी गारा नगर मे पहुँचा। यह नगर बहुत विस्तृत था। यहाँ क मरुत मिट्टी और पत्थर के थे। राजा ने इसका पथ-प्रदर्शन देना अङ्गीकार कर लिया। अब इसके साथ आगे बढने को तैयार न हुए। एक साथी के सिवा और सब भाग गये। इन दोनों क साथ मगो पार्क उत्तर-पूर्व की ओर चला। रास्ते म मूर लोगो न इसका बहुत सताया और इसका बहुत मा सामान छीन लिया। अन्त मे त्रिनाउन म यह पकड लिया गया। मूर लागों ने इसको

अपने गन्ना के पान्न पहुँचाया। राजा क्या गाढ़े हुए एक गुन मँदान में पटा था। इधर-उधर बकरियाँ चर रही थीं और वहन से ऊँट तथा ढोर भी पान्न पी रहे थे। यहाँ पंचत हा इसका तलाशी ली गई और मार प्रथा के इसको पाल कर दिया गया। यह जानने के लिए कि यह भी—
—न्हीं की तरह—मनुष्य है, इसका उँगलियाँ तक गिनी गई। यह कैद कर लिया गया। एक मूँदर के साथ रहने के लिए इसका जगह मिला। राजा ने इसका कुतुबनुमा ले लिया और ज्ञ देया कि उसकी सुई, जिधर भी रसिए, एक हा और घूमती है तो उसे जादू का ममभकर लौटा दिया।

बालका, क्या तुम भा इसी राजा का नाइ कुतुबनुमा का देगकर घबरायाग ? क्या तुम बता मरुत हा कि यह सुई एक हा और क्यों घूमती है। भला बताओ ता वह कान दिशा है जिधर यह घूमती है। मगो पार्क यथेष्ट अपमानित हा चुका था। पर जब यह वीमार पडा और समूम हवा रत क पहाड बनाने लगा तो बहुत घबराया। उमने वहाँ से भागना चाहा। मूर लोगों ने अपने शत्रुओं में लडाई छेड दी थी। अपन शत्रुओं का, आगे बढ़ने की, गबर पाकर वे भा उत्तर की ओर बट। यहाँ मगो पार्क से रानी का भेंट हुई। मूर लोगों ने इसका साथ अच्छा बर्ताव किया। पर वे लोग रेगिस्तान के निरुद आ पहुच थे, और रेगिस्तान का कष्ट आरम्भ हो गया था। लोगों की जल अच्छी तरह से

नहीं मिलता था। यदि कहीं एरु-आध कृआ मिल भी जाता तो वहाँ इतनी भीड़ लगी रहती थी कि आपस में मार-पीट हो जाती थी। मगो पार्क को विधर्मी समझकर वे लोग कुएँ के पास जाने ही न देते थे। जानवरों को भी बहुत कम पानी मिलता था और कभी कभी तो बेचारे गीती मिट्टी (कीचड़) का ही गाकर प्यास बुझाते थे।

मगो पार्क को अब जर्जर जाने की अनुमति मिली। अब यह चला तो इतने वेग से आधी चली कि इसके कान और नाक में धूल ही धूल भर गई। इमका दम घुटने लगा। जानवर घबराकर इधर-उधर दौड़ने लगे। मगो को डर लगता था कि वह इनके पैरों के नीचे दबकर कहीं मर न जाय। इस प्रान्त में बुरके का व्यवहार कदाचित् इसी कारण होता है।

जर्जर में पहुँचते ही ज्ञात हुआ कि शत्रु निकट है। मारे डर के मूर लोग, मगो पार्क का साध लेकर, वापस लौटना चाहते थे। परन्तु एक दिन यह बहुत सत्रंग भाग निकला। चलते चलते प्यास के मारे मरने लगा। उस समय बड़े वेग से पानी बरसने लगा। अपने कपड़ों में इस जल को इकट्ठा कर इसने पी लिया। बहुत कष्ट के बाद यह सेगो नगर में पहुँचा। इतने दुःख के पश्चात् इसको बहुत ही आनन्द हुआ क्योंकि अब इसे ज्ञात हो गया कि वह नाइजर के किनारे पहुँच गया है। मगो लिखता है कि नाइजर टेम्स के बराबर चौड़ी है और धीरे धीरे पूर्व की ओर बहती है। सेगो नगर

बहुत ही सन्तुष्टिगाली है। अफिरा रु बीच में एमे नगर का होना उस समय बड़े आश्चर्य की बात थी।

संगा पहुँचने क एक दिन बाद ही यह नदी के मुहाने का मोर्चा चल दिया और मिला में पहुँचा। नदी बढी हुई थी। यह वहाँ से लाट पडा। इसका स्वाभ्य विगटन लगा। गन्त म जङ्गली जानवर भी अधिक थे, फिर हवशियों का भी डर था। उमलिण ऐसी अवस्था में नदी के मुहाने तक पहुँचना असम्भव समझकर यह एक कारवाँ के साथ पिसँनिया गया। फिर एक जहाज पर बैठकर पश्चिमी द्वीप समूह गया और वहाँ से २१ वर्ष के बाद ईंगलिमान पहुँचा।

सन् १८०५ ई० म मगो पार्क दुवारा गैत्रियाकी और चला। अफिरा बार बहुत से मिपाहियों को साथ लेकर यह नाइजर नदी के पास पहुँचा। यहाँ इमने एक किरती कर ली। आठ आदमियों के साथ उसे रोता हुआ यह मुहाने का द्वार चला। टिब्रुट्ट के बाजार म इसने अपनी वस्तुओं का आदान प्रदान किया। वहाँ से कुछ दूर पूर्व की ओर गये हुए यह दक्षिण की ओर चला और रोमा म पहुँचा। यहाँ के निवासियों ने इम पर हमला किया और लगभग सन् १८०६ ई० में इमको मार डाला।

मगो के अधूर कार्य का लैंटर ने, सन् १८३० ई० में, पूरा किया। उसका नाइजर का मुहाना मिल गया।

जेम्स ब्रूस

जन्म-स्थान--किनायर्ड, सन् १७३० ई०,

मृत्यु--सन् १७९४ ई०

जेम्स ब्रूस स्कॉटलैंड का रहनेवाला था। खोज का कार्य में बचपन से ही इसको बहुत उत्साह था। पर इसे अक्सर बहुत कम मिलता था। यह सन् १७६३ ई० में एलजी-यर्स में अंगरेज सरकार की ओर से कौमल (व्यापारी दूत) नियुक्त किया गया। यहाँ इसको अफ्रिका के भीतरी देश के बारे में बहुत से किस्से ज्ञात हुए। इमने अरवा भापा भी सीख ली। सन् १७६८ ई० में यह काहिरा नगर में गया। वहाँ का बादशाह आकाश विज्ञान और वैद्यक सम्बन्धा इमके गुणा का सुनकर बहुत मन्तुष्ट हुआ। उसने नील नदी की खोज करने में इसका यथासाध्य सहायता का। ३० गज लम्बी एक किशती लेकर ब्रूस नदी के उद्गम की ओर रवाना हुआ। हवा विपरीत दिशा में चल रही थी। बड़े बड़े पाल काम नहीं देते थे। नदी के आस पास भूमि हरी-भरी थी। पिरैमिड भी दृष्टिगोचर होते थे। अस्वान तक चलकर इसको जल-प्रपात मिले। इनको पार कर किशती को आगे बढाना बहुत ही कठिन था। इसलिए इमने कौने तक वापस

जाना ठीक समझा। यहाँ उसने किरती को छोड़ दिया। फिर कुछ कारवाँ के साथ यह लाल सागर की ओर चल दिया। घाड़ से घोड़ा ऊँटा और हथियारों को इमने साथ ले लिया था। रात में लाल सागर के रास्ते तरु के बरान में यह लिखता है—
 "म कोई भा प्राणी ऋषिगोचर नहीं होता। पैड़-पैधे का ता नाम तरु नहीं है। पीने के लिए पारा पानी भी नहीं मिलता। ऐम जानवर भी नहीं मिलते जो प्राय रेगिस्तानों में पाये जाते हैं। आकाश में चिड़ियाँ भी नहीं दिखाई पड़ती।"

एस मार्ग से चलना ठण्ड देश के रहनेवाले के लिए बड़ा कठिन कार्य था। पर धैर्य के साथ ब्रूम बढ़ता ही गया। अब इसका रत के पहाड़ दिखाई पड़ने लगे। ज्यों ज्यों यह पूर्व की ओर चलता गया त्यों त्यों सङ्गमरमर के पहाड़ दिखाई पड़ने लगे। लाल सागर के किनारे सीयर नगर दिखाई दिया। यहाँ से किरता पर बैठकर ब्रूम सिनाई प्रायद्वीप गया, वहाँ से जहा पहुँचा। यहाँ एक महीना रहकर वाजुलमदब का ओर चला और वहाँ से घूमकर एरीट्रिया के पूर्वी तट पर ममावा नगर में पहुँचा। इमने काहिरा के राजा की चिट्ठियाँ यहाँ के राजा को दीं। अब इसका बड़ा आवभगत हुई। एरीसानिया के राजा के लटके बीमार पड़ थे, उसने ममावा के राजा का चिट्ठी लिखी कि उस अंगरेज डाक्टर का भेज दीजिए जो आपक यहाँ था। कुछ साथियों को लेकर ब्रूम एबीसीनिया की ओर चला। रास्ते में

एक नदी मिली, जिसमें लाल मिट्टी जियो हुई थी। उसका
 के पश्चात् इतना पानी हा गया था कि नदी में इतने पानी
 का डुवा दिया था। अब यह नदी नदी में बहती है।
 यहां के राजा ने अतिथि की वटा इतना ही है। यहां
 विचिन्ता यह थी कि चाँदी के सिक्के के रूप में इतनी
 के रूप में काम में लाय जाते थे। यह नदी नदी में बहती
 बात थी। पर जिन्होंने इस मन्त्र के इतना ही किये जा
 देखा है उनके आश्चर्य महा शक्ति है। नदी के मुख्य उदय
 गेहूँ, जौ और मटर है। पदार्थों में से नदी में गोबर
 नगर है। इसी नगर का आर इतना ही है। राम में देवी
 और भाडियों में। अक्सर नदी में से एकद्वारे और
 सिंह निकलते थे। बड़ा बड़ा शौच भी था। मार्ग में
 काले आदमा प्राय इतना ही है। १५ फरवरी तक
 १७७० ई० में यह गाँव पश्चात् पश्चिमिया का गाँव राम
 में नहा था, पर रानी ने अपन इतने इतना दिया है।
 बच्चों का चक्क निकली थी। नदी के नदी और
 कियो बन्द कर दी गई था। राम ने नदी को
 कियो का मुलवा दिया और नदी के त्रिप जोर
 राजकमार अच्छे हात लगे। राम नदी का बड़ा पत्थर है।

लाग जामार पड गय, कुछ भाग गये और कुछ मर गये । स्पीक भी वामांगी से बहुत दुःखी हो गया । फिर भा चलते चलते वे लाग करन म पहुँच । यहाँ क राजा न उनके भाय वहन अच्छा बर्ताव किया । मन् १८२ ई० म स्पीक सुन्दर प्रगांडा प्रदेश मे पहुँचा । यहाँ का जलवायु बहुत अच्छा ह । कला अधिक उपज होता है । यहाँ मरानों मे सफाई अधिक है । यहाँ क निवासा अपने राजा का सबसे अधिक शक्तिशाली मानते थे ।

अभा तरु नाल नदी का पता नहा चला घा और स्पीक इसी राज म विक्टोरिया न्याञ्जा क उत्तरी किनार को देखता दग्गता आगे बढ़ गया । यहाँ से वह दक्षिण की ओर लौटा । यहाँ उमने रिपन प्रपात क पाना जो १०० फीट का ऊँचाई सं गित देख्य । यह बहुत ही सुन्दर दृश्य था । मञ्जलियाँ, मगर और दरियाइ घोड (हिपोपेटैमस) इधर-उधर पानी क बाहर मिर निकाले फिर रहे थे । मञ्जली माग्नवाले कौटिया लिये हुए किनारे पर बैठे थ । छाटी छोटी नावें इधर-उधर फिर रहा थीं । यह दृश्य देखकर वे लोग नील नदी के मुहाने की ओर नावों में उठकर चले, परन्तु वहाँ के राजा ने उनका आग न बढने दिया । तब नावें छाडकर वे लोग नदा से बहुत दूर पश्चिम की ओर चल गये । पर विक्टोरिया न्याञ्जा क वाच की भील क्रियोगा का पता न चला । एलबर्ट न्याञ्जा क विषय मे उन लोगों से यह सुना कि वह बहुत दूर नहीं है, पर वहाँ पहुँच

न सक। इसलिय वे लोग नदी क मुहाने की ओर चले और गोडाकारो में पहुँचे। वहाँ पर स्पीक एक और साथी सेमुयेल बेकर और उमका स्त्री स जा मिला। फिर वहाँ स काहिरा होते हुए सन् १८६३ ई० में वल्ट डुर्गलड पहुँचा। बन्दूक की गोली लगन से सन् १८६४ ई० में उमका मृत्यु हो गई।

सेमुयेल बेकर का फिरमा यह था कि यह काहिरा में सन् १८६१ ई० में अपनी पत्नी क साथ, स्पीक स मिलन क लिये, चला और घोडा मी अरबी भाषा सीखकर बर्रर तरु पहुँचा। वहाँ से गटबरा नदी में हाते हुए एरीसीनिया में गया और नील की नाला शाखा क रास्ते मारनूम पहुँचा। फिर श्वेत नील के रास्ते गोडाकारो में स्पीक स मिला। इसन स्पीक से एलवर्ट न्यात्रा का नाम सुनकर वहाँ जान की ठान ला। मार्ग दुर्गम था। इसक साथिया न भी इसका धोखा दिया। इस प्रान्त क राजा न भी पहले-पहल ठीक रास्ता नहा बताया। अन्त में वकर स एक बन्दूक लेकर उसने राह बता दी। सन् १८६४ ई० में वकर न एलवर्ट भील का पना लगाया और मर्चिसन प्रपात तरु नाव रखते हुए पहुँचा। अत्र यह बापस चला और मुसीबते भूलकर गोंडोकारो पहुँचा। फिर वहाँ स मारनूम और सौकिन क रास्ते, जा लाल सागर के किनार पर स्थित है, सन् १८६५ ई० में यह विलायत पहुँचा।

लोग वामांग पड गये, कुछ भाग गये और कुछ मर गये। स्पाक भी जीमारी से बहुत दुबला हो गया। फिर भी चलते चलते वे लाग कैरन में पहुँच। यहाँ के राजा ने उनके साथ बड़ा अच्छा बर्ताव किया। मन् १८६० ई० में स्पाक सुन्दर यूगांडा प्रदेश में पहुँचा। यहाँ का जलवायु बहुत अच्छा है। कता अधिक उत्पन्न होता है। यहाँ मकानों में सफाई अधिक है। यहाँ के निवासी अपने राजा को सत्रसे अधिक शक्तिशाली मानते थे।

अभा तक नील नदी का पता नहीं चला था और स्पाक इसा खोन में विक्टोरिया न्याब्जा के उत्तरी किनारे को देखना लगता आगे बट गया। वहाँ से वह दक्षिण की ओर लौटा। यहाँ उसने रिपन प्रपात की पानी को १०० फीट की ऊँचाई से गिरते देखा। यह बहुत ही सुन्दर दृश्य था। मछलियाँ, मगर और दरियाई घोड़े (हिपोपोटेमस) डधर-डधर पानी के बाहर सिर निकाले फिर रहे थे। मछली भाग्नेवाले कैंटिया लिये टुण किनारे पर बैठे थे। छोटी छोटी नावें डधर-डधर फिर रही थीं। यह नश्य देखकर वे लाग नील नदी के मुहाने की ओर नावों में उठकर चले, परन्तु वहाँ के राजा ने उनकी आगे न बढ़ने दिया। तब नावे छोड़कर वे लाग नदी से बहुत दूर पश्चिम का ओर चले गये। पर विक्टोरिया न्याब्जा के वाच का भील कियागा का पता न चला। एलवर्ट न्याब्जा के विषय में उन लोगों से यह सुना कि वह बहुत दूर नहीं है, पर वहाँ पहुँच

गर्बर्ट मुफैट ईमाई पादरी था। यह धर्म-प्रचार के लिए यहाँ आया था। इसने देगा लोगों के साथ रहने से उनकी भाषा और आचार-व्यवहार भी सीख लिया था। खोज के कार्य में डमन लिविगस्टन की बहुत सहायता की। पर लिविगस्टन बचुआना लोगों की भाषा सीखने की इच्छा से बहुत दिनों तक उत्तमाशा अन्नरीप में रहा। फिर उन लोगों का अपने वश में करके आप ईमाई धर्म के प्रचार-कार्य में लगा रहा। यह जब भाषा सीख चुका तो ये लोग इसका बहुत आदर करने लगे। सन् १८४६ ई० में खाना होकर डमन नगामी भील का पता लगाया। मैवेल्सा में इसको एक सिंह न घायल कर दिया। पर यह उत्तर की ओर बढ़ता ही गया। यहाँ के शामक ने सबका मिलकर रहने की जगह दे दी। लिविगस्टन यहाँ हर प्रकार के काम करने लगा। कभी तो यह लडको का पटाता, कभी व्याख्यान देता और कभी दवा बँटता था।

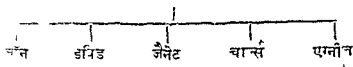
यहाँ के डच निवासियों का बुझर कहते हैं। उन लोगों ने लिविगस्टन को बहुत दुःख दिया। सन् १८४६ ई० में यह अपने साथ कुछ मनुष्यों का लेकर कलहारी रेगिस्तान का ओर चला। कहा जाता था कि कलहारी में एक भील है। लिविगस्टन महीने भर तक उसे ढूँढता रहा, पर डमको एक बूँद भी पानी न मिला। अन्त में यह नगामी भील के पास पहुँचा और वहाँ से वापस आया।

डेविड लिविंग्स्टन

जन्म स्थान—लैनटायर, सन् १८१३ ई०,

मृत्यु स्थान—लाला, सन् १८७३ ई०

नील लिविंग्स्टन



डेविड लिविंग्स्टन छोटा उम्र में एक रुई के कारखाने में काम किया करता था। इसमें इतना धन इकट्ठा कर लिया था कि डाक्टरों पटन के लिए यह ग्लासगो चला गया। फिर सन् १८४० ई० में, डाक्टरों पास कर लें पर, लंदन मिशनरी सामाइटो ने इसका अपना कर्मचारी नियुक्त कर लिया। इस चीन जानने की प्रबल इच्छा थी, पर उसी समय अंगरेजों और चीनियों में लड़ाई छिंट गई थी इसलिए यह वहाँ न जा सका। २० नवंबर सन् १८४० में यह अफ्रिका का शेर चल दिया और अलगोआ का खाडी में उतरा। यहाँ इसने रॉबर्ट मुफैट की लड़की से विवाह कर लिया। इस सम्बन्ध के कारण डेविड लिविंग्स्टन का देशों में जाने में बहुत सहायता मिला।

गॉवर्ट मुफ़ट ईसाई पादरी था। यह धर्म-प्रचार के लिए यहाँ आया था। इसने देशी लोगों के साथ रहने से उनकी भाषा और आचार-व्यवहार भी सीख लिया था। खोज के कार्य में इसने लिविगस्टन की बहुत सहायता की। पर लिविगस्टन रेचुआना लोगों की भाषा सीखने की इच्छा से बहुत दिनों तक उत्तमाशा अन्तरीप में रहा। फिर उन लोगों को अपने वश में करके आप ईसाई धर्म के प्रचार-कार्य में लगा रहा। यह जब भाषा सीख चुका तो ये लोग इसका बहुत आदर करने लगे। सन् १८४६ ई० में खाना होकर इसने नगामी भील का पता लगाया। मँवोत्सा में इसको एक मिट्टी ने घायल कर दिया। पर यह उत्तर का ओर बढ़ता ही गया। यहाँ के शास्त्रों में सबका मिलकर रहने की जगह दे दी। लिविगस्टन यहाँ हर प्रकार के काम करने लगा। कभी तो यह लड़कों का पढाता, कभी व्याख्यान देता और कभी दवा नाँटता था।

यहाँ के डच निवासियों का बुझर कहते हैं। उन लोगों ने लिविगस्टन का बहुत दुख दिया। सन् १८४६ ई० में यह अपने साथ कुछ मनुष्यों को लेकर कलहारी रेगिस्तान का ओर चला। कहा जाता था कि कलहारी में एक भील है। लिविगस्टन महीने भर तक उसे ढूँढता रहा, पर इसको एक बूँद भी पानी न मिला। अन्त में यह नगामी भील के पास पहुँचा और वहाँ से वापस आया।

सन् १८५१ ई० में यह मकालोलो लोगों के राजा के पास गया। यह देश बहुत ही उपजाऊ था। यहाँ बहुत नदियाँ भी थीं। एक वर्ष से कुछ ही अधिक दिनों तक यह अफ्रिका के पार गगन में लगा रहा और बहुत कष्ट उठाने के पश्चात् सेंट पॉल में पहुँचा। नक्शे में देखो सेंट पॉल कहाँ है। इसी स्थान पर लिविंग्स्टन न जेम्बेजी नदी का देखा। यहाँ से वह फिर अपनी स्त्री के एक नगर में पहुँचाने गया। उसे पहुँचाकर मकालोलो लोगों के पास वापस आया। फिर इनमें से कुछ का लेकर लौएटा नगर की ओर चला। लेकिन रास्ते में बमबार पड़ गया, पर चतता ही रहा। इसने रास्ते में शत्रुओं का समझाया। मैजिक लालटेन की तरारें दिखाकर यह उन्हें भुताता रहा। देश राजाओं ने मार्ग में कर माँगा तो लिविंग्स्टन ने अपना कोट, बटन, छुरा और दुशाला आदि दे दिया। खाना भी चुरा गया था और लोग बहुत धरु गये थे। अन्त में बहुत समझाने पर लाग समुद्र के किनारे आ पहुँचे। मकालोलो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने समुद्र का देखते ही सोचा कि पृथ्वी का अन्त आ गया है। लिविंग्स्टन का स्वास्थ्य बिगड़ गया था। वह चाहता था वहीं से घर लौट जाता। पर मकालोलो लोगों से यह कह चुका था कि उनके वापस घर पहुँचावेगा इसलिए उनको घर ले जाने की इमन ठान ली। लिविंग्स्टन नगर मकालोलो लोगों का मुख्य नगर था। वहाँ पर यह

वापस आया और कुछ दिन ठहरकर यहाँ से पूर्वी मगुड-नद का आर चला। इसको पहचानने के लिए मक्कालाता लोगों क राजा सेत्रिडुयेने जैविजी नदी तक आया। फिर इमन एक जल प्रपात देखा, जिसका नाम विस्टोरिया प्रपात रखा। यहाँ क लोग इसका शंगरे करते थे और अब मोम्ब्राडुनिया करते हैं। इस जल-प्रपात के अति निरुद म भी यह नहीं कहा जा सकता या कि नन-धारा फिधर का है। आम-पाम चारों आर जल क कर्गों से रुहरा मा छा जाता है, मातों भाप क गम्भ गडे हों। बहुत मावधानी स देखने पर ज्ञात हुआ कि नदी २८०० फीट चौड़ी है। नोचे गिरते ही वह १५ या २० गज क एक तद्ग रास्ते स गहन लगती है। अब नदी क रास्ते य लोग आगे बढ़े और किर्नी-र्मनी पहुँचे। सन् १८५७ ई० म लिविंग्स्टन इंगलैंड गया। यहाँ पर यह पूर्वी अफ्रिका का कौमल बना दिया गया।

दो वर्ष पश्चात् लिविंग्स्टन, कुछ मनुष्यों और एक जहाज क साथ, किर्नीर्मनी में आया। यहाँ एक छाटे जहाज पर बैठ-कर इमन जैविजी क नोचे क हिस्से को देखा और शायद नदी की भी परीक्षा की। इसी समय शिखा भोल का भी पता लगा। कुछ दिनों के पश्चात् न्यासा भोल का देखा। इधर, पूर्वगालवाले लिविंग्स्टन की गोजों से व्याकुल हो गये थे। उन्होंने ब्रिटिश राजा को यह मन्देश भजा कि लिविंग्स्टन दक्षिणी अफ्रिका में बहुत अत्याचार करता है। इस पर

लिविंग्स्टन इंग्लैंड वापस बुला लिया गया। मन् १८६६ ई० में वह फिर अफ्रिका का ओर चला। अब की बार उसने न्यामा का उत्तरी भूमि का और नील नदी के उद्गम का पता लगान का ठान ली थी। इसके बहुत से साथी भाग गये, पर यह आग बढ़ता ही गया और मोणरो भील तथा वगेलो काल का पता लगा लिया।

उत्तर का ओर चलकर लिविंग्स्टन उजीजी पहुँचा। अब यह बहुत दुर्बल हो गया था। एक बार फिर यह कांगो नदी की शाखा लोम्राटा नदी की ओर चला और सन् १८७१ ई० में इस धाग के निकट पहुँच गया। यहाँ पर हथेली घेरे जाते और मोल लिये जाते थे। जब यह उजीजी वापस आया तब इसकी सम्पूर्ण भोज्य-भामग्री चुरा गई थी। पर मौभाग्य से हनरी मार्टन स्टैनली (इसके धारे में तुम अगले क्रिस में पढ़ोगे) कुछ खाद्य पदार्थ के साथ आ गया। इससे लिविंग्स्टन के प्राण में प्राण आये, पर दोनों में कुछ अनबन हो गइ। इसमें वह लिविंग्स्टन का अकेला छोड़कर पूर्वी समुद्र-तट पर जा पहुँचा। स्टैनली और लिविंग्स्टन ने अच्छी तरह से इस बात का जाँच कर ली थी कि टेंगनिका के उत्तरा किनारा से नील नदी ही निकलती है। स्टैनली के चले जाने के बाद लिविंग्स्टन ने अकले ही वगेलो की ओर यात्रा की। ८ महीने के पश्चात् यह वगेलो के दक्षिणी किनारे इलाला नगर में पहुँचा। इस समय यह बहुत थक गया था। १ मई

मार् १९७३ ई० में इसका मृत्यु हो गई। इसका दगो साधियों १ इसका मृत शरीर का आठ महीन तक ल चलकर समुद्र-किनारे पर पहुँचाया, जहाँ से वह पिलायत भन दिया गया। वेस्ट मिनिस्टर क गिर्ने म बडा धूमधाम के साथ इसका शव गाड दिया गया।

हेनरो मार्टन स्टैनली

जन्म—सन १८४० ई०, मृत्यु—सन १९०४ ई०

हेनरो मार्टन स्टैनली का असली नाम जॉन गार्लंड है। वह बहुत ही निर्धन था। डेनमार्क के निकट उसका जन्म हुआ था। १३ वर्ष की अवस्था तक सेंट आसफ के दरिद्राश्रम में उसका शिक्षा मिला। फिर इस आश्रम को छोड़कर एक वर्ष तक उसने शिक्षक का काम किया। इसके पश्चात् एक जहाज में नौकर होकर वह न्यू आरलियस पहुँचा। यहाँ से एक साँदागर का वह कृपा-पात्र हो गया। इस साँदागर का नाम स्टैनली था। उस साँदागर के कोई लड़का न था, इससे उसने रोलैंड को गोद ले लिया। लेकिन स्टैनली ने तो अधिक दिना तक जायित रहा और न इस लड़के का नाम कुछ लिया ही पाया। इससे स्टैनली के मर जाने पर रोलैंड का कुछ न मिला। गोद लेनेवाले पिता के नाम से ही वह प्रसिद्ध रहा।

अब हेनरो को सेना में नौकरी करनी पड़ी। वह एक छोटा अफसर हो गया। नौकरी छोड़कर वह तुर्किस्तान चला गया। वहाँ से फिर अमेरिका पहुँचा। अमेरिका में

वापस आन पर वह 'न्यूयार्क हेराल्ड' समाचार-पत्र का सवाददाता नियुक्त हुआ।

मन् १८६६ ई० में वह लिविंग्स्टन की खोज में भेजा गया। यह तुम पीछे पड ही चुक हो। मन् १८७० ई० में लिविंग्स्टन का पता लगाकर वह इंगलिस्तान लौट गया। वहाँ उसने अपने अफ्रिका-दर्शन का अद्भुत कहानियाँ सुनाई। महारानी विक्टोरिया ने सन्तुष्ट होकर उसको एक सोन की सुँघनीदानी दी। रायल ज्याॅगराफिकल सोसाइटी ने भी उसका एक स्वर्ण पदक दिया। 'इली टेलोग्राफ' और 'न्यूयार्क हेराल्ड' के सम्पादकों ने उसको तीन वर्ष के बाद, मन् १८७४ ई० में, लिविंग्स्टन के अधूरे काम को पूरा करने के लिए भेजा।

हेनरी मार्टिन स्टैनली का यह पता लगाना था कि विस्टोरिया न्याञ्जा और टैंगनिका झील में कोई मध्यम है या नहीं। तीन अँगरेजों के साथ खाना होकर वह जजीवार में पहुँचा। उसने ४० फीट लम्बी फिरती अपने साथ ले ली। इसके ८ टुकड़े किये जा सकते थे और इन टुकड़ों को पाँठ पर लादकर भी ले जा सकते थे। जजीवार में ३०० देशी आदिमियों को साथ लेकर वह खाना हुआ, पर रास्ते में इनमें से कुछ घीमार पड गये, कुछ मर गये, कुछ भाग गये और कुछ की देशी लोगोंने मार डाला। लगभग १०० मनुष्यों के साथ वह यूगोगो नगर से उत्तर-पश्चिम का ओर

पल टिया। वे लोग एक नदी, सुन्दर और विस्तृत देश में पहुँच। घाम क एम मैदान दिखाई पड़े जिनमें पेड़ों का नाम न था। गाय बल, भेड़ और बकरियाँ चरती दिखाई पड़ता था। यह प्रदेश विक्टोरिया न्याञ्जा क दक्षिण में है। क्या तुम बता सकते हो कि इस प्रान्त में पेड़ क्यों न थे। क्या एशिया में भा कोई ऐसा स्थान है? अन्त में चलते चलते स्टैनली के एक साथी न विक्टोरिया न्याञ्जा को देगा। स्पाक की खाड़ी को पार करके स्टैनली विक्टोरिया न्याञ्जा में अपनी किरती लेकर पहुँचा। यहाँ उसने बहुत से दरियाई घोड़ देखे। तेज आँधी चल रही थी। विजली चमक रही थी। स्टैनली क माथा धबका उठे। रिपन जल-प्रपात को पार करता हुआ वह विक्टोरिया न्याञ्जा में पहुँचा और वहाँ से यूगांडा आया। यूगांडा के राजा ने स्टैनली का बड़ी आदरभाव से और उससे बहुत से प्रश्न किये। अब वह वापस चला। पर उसका एक अँगरेज साथी मर गया। स्वयं स्टैनली भी बामार हो गया।

यूगांडा का राजा मुसलमान नहीं होना चाहता था पर अँगरेजों का इतना चाहता था कि उनका धर्म स्वीकार करने के लिए प्रमत्त हो गया। उसने स्टैनली की सहायता करना स्वीकार कर लिया। यूगांडा से पश्चिम और चलकर स्टैनली न एलबर्ट न्याञ्जा और एडवर्ड न्याञ्जा का पता लगाया। इस क पश्चात् वह बजीजी गया। वहाँ से उसने किरती में तमाम भील का चेकर काटा। उसने अब अच्छी तरह से पता लगा लिया कि

विक्टोरिया न्याञ्जा क माथ टैगनिका का फाइ सम्बन्ध नहीं है। स्टेनती का पश्चिम का ओर चलन पर लुआलेवा नदी दृष्टिगोचर हुई। लुआलेवा क शान्ते चलते चलते वाह नियांगे पहुँचा। यहाँ उसका एक शरयो मिला। इमन अपन २०० मनुष्यों क साथ सहायता करन का वचन दिया।

स्टेनती अब घने वनों में से होता हुआ चला। इन वनों में हनवाले मनुष्य बहुत ही छोटे फट क थे। ऊँचाई से ये प्राय गज भर क थे। इनका मिर बहुत बड़ा और दाढ़ी बहुत लम्बी थी। ये ट्राटी छोटी भोपडियां मे रहते थे। भोपडियां कले क पत्ता का बनी थीं। उनका निकट दो-एक बरुरियां भी बंधी हुई थीं। जङ्गल में घुन्दर बहुत थे। हिम जन्तुओं में चीने इतने अधिक थे कि थोड़ी थोड़ी दूर चलने क पश्चात् ही दो एक अशय दिखाई पडते थे। साथ असह्य थे। धूप अन्धरी तरह नीचे नहीं पहुँचती थी और पेडों से पाना का बूँदे टपकती था। नीची भूमि में कीचड़ ही काचड़ था। कहीं कहीं रास्ते में पानी इतना डरुवा हो जाता था कि चलते समय दूसरों पर छिटकरकर पडता था। अब उन्हीं जलमार्ग से आगे बढ़ने क त्रिण नदी में किरती डाली। कुछ लोग तो किरती में पैंठ गये और कुछ पैदल चले। रास्ते में दगी लोगो ने आक्रमण किया। बचते बचाते ये लाग उम जल-प्रपात के निकट पहुँचे जो अब स्टेनती के नाम से प्रसिद्ध है। कुल सात भग्ने मिले

विनाका पार करन म २२ दिन तग गये । इन द्रपारों क
 धार क द्रोपों म कण्ड तर-भनक गणो धे । इन्होंने कई बार
 आनमन किया । आग घटते घाते य याथा जने ग्यान मे आ
 प प तहाँ तग का पाता पैजा हुआ था । इम ग्यान का
 तम स्ननवा पुल रफगा गया । इनक आग फिर भरन निर
 आर मीननी मनुष्या पर कित्तिया गाकर आगे घटा ।
 इमका तीमरा जैगदज माया यो मर गया । स्नैनी जय
 समुद्र म पीरर भरन क पाम पहुँचा गो उमर नदी क मुहान
 तर पैदा पहुँचना थाहा । अन्य म बर समुद्र क किनार
 वामा नगर में पहुँच गया । वागनर में उमी न कागा नदा
 का ठाक ठाक पना लगाया । इम समय म यहाँ की मुख्य
 रगुणें—तत्र रथर और हागी-द्रीत इत्यादि—भिन्न भिन्न दशों
 म भेजी जान लगा ।

मन् १८६५ मे १८०० ई० तरु हनरी मार्टन स्नैनी
 पार्लियामट का सदस्य रता । मर १८०४ ई० में उमकी
 मृत्यु हुई । उमन अपनी जायती बडा सतिग भापा म
 तिया है ।



एविल जैसन टेस्मन

जन्म-स्थान—इर्न, लगभग सन् १६०० ई०,

मृत्यु—लगभग सन् १६४४ ई०

लोगों ने बहुत पुराने समय से यह सुना था कि ध्रुव दक्षिण में एक महाद्वीप है। पर उनके पता लगाने का विचार किसी को बहुत दिनों तक नहीं हुआ। पुर्तगाल-वालों और स्पेनवालों ने डधर-उधर के देशों का पता लगाया था, पर बहुत दक्षिण में वे भी नहीं गये थे। रूसियों के पूर्वी द्वीप-समूह में ये लोग आये हुए थे और व्यापार का काम बड़ा हुआ था। किन्तु स्पेनवालों ने निर व्यापार के निमित्त राज का काम नहीं किया था, उनकी इच्छा तो नये देशों को ढूँढ निकालने का थी। उन्होंने सन् १५८५ ई० में मारकिजा द्वीप और न्यू हेनरीज का पता लगाया। जो लोग वापस आये उन्होंने दक्षिणी महाद्वीप के बारे में बड़े अद्भुत किस्से सुनाये। इनमें से डी कीरास मुरय था। यह सन् १६०५ ई० में टारस के साथ दक्षिणी महाद्वीप का पता लगाने को रवाना हुआ। यह हेनरीज के बड़े द्वीप का पता लगाकर वहाँ से वापस लौट आया। इसने टारस को दूसरी जगह छोड़ दिया था और उसी ने पहले पहल आस्ट्रे

लिया और न्यू गिनी के बीच के रास्ते का पता लगाया। यह रास्ता अब उसी के नाम से प्रसिद्ध है। इसको टारम जल-सयाजक कहते हैं।

पूर्वा द्वीप-समूह में अब पुर्तगालवालों की शक्ति बढ़ गई। उन्होंने डच लोगों के बहुत से द्वीप ले लिये और टेरा आस्ट्रेलिया या दक्षिणी महाद्वीप का पता लगाना आरम्भ किया। सन् १५६८ ई० में एरू डच ने आस्ट्रेलिया के विषय में लिखा है—“यह सबसे दक्षिण का भूमि है। टारम जल सयाजक इसको न्यू गिनी से अलग करता है। यह इतना बड़ा है कि इसको पश्चिम महाद्वीप कह सकते हैं।” सन् १६०६ ई० से सन् १६३० ई० तक डच लोगों ने इससे बहुत से हिस्से का पता लगाया था—जैसे लिरीन अन्तरीप, हार्टाग द्वीप और कारपेंटरिया। पर इनमें सबसे प्रसिद्ध एन्टि टैस्मन है। सन् १६४० ई० में यह प्रदेविया भेजा गया। यहाँ से यह मारिणस का ओर चला और फिर वहाँ से दक्षिण पूर्व की ओर चलते चलते टममानिया में पहुँचा। इस द्वीप का नाम इसने वैनडोमसलड रक्खा। पर आजकल यह टममानिया के नाम से ही प्रसिद्ध है। इसको यह पता नहीं था कि यह द्वीप है। यह पूर्व का ओर चला और न्यूजीलैंड के दक्षिणी द्वीप में पहुँचा, किन्तु यहाँ उतर न सका। यहाँ के मनुष्य बहुत ही जड़नी थे। यहाँ से यह उत्तर-पूर्व का ओर चला और फ्रेंडली द्वीप पुत्र में पहुँचा।

वहाँ से बटेनिया वापस आया। सर १६४४ ई० में यह फिर खाना हुआ और टम्सन आम्ब्रेनिया के उत्तरी हिस्से का पता लगाया। यह टारस जल-मयानक का पार नहा कर पाया था कि इसका दहाना हो गया।

विलियम डैपियर

जन्म—सन् १६५० ई०, मृत्यु—लगभग सन् १७१५ ई०

डैपियर एक श्रेंजरज नाविक था। बचपन में ही वाप क मर जाने से यह नाविक का कार्य सीखने लगा। इमने सन् १६८८ ई० में आस्ट्रेलिया के उत्तरी पश्चिमी हिस्से का पता लगाया। यह आस्ट्रेलिया के उत्तरी हिस्से के द्वार में लिखता है—“यहाँ के निवासी बहुत ही दरिद्र हैं। समुद्र से थोड़ी ही दूर पर रेत की छोटी छोटी पहाड़ियाँ बनी हैं, और इनके पीछे देश के अन्दर जङ्गल हैं। ऊहा पानी नहीं दिग्वाई पडता। कुआँ रोदन पर हा पानी मिलता है।” घर वापस जाकर इसने ऐसे अद्भुत किस्से सुनाये कि १६८८ ई० में यह एक जहाज लेकर दुबारा आस्ट्रेलिया की खोज के लिए भेजा गया। उत्त माशा अन्तरीप के रास्ते से यह शास्स की खाडी में पहुँचा। यहाँ से उत्तर-पूर्व की ओर चला। यह भूमि रेतीनी थी, पर यहाँ बहुत ही सुन्दर फूल खिले हुए थे। इस बहुत दिनों तक पैदल चलना पडा। रास्ते में इसका भोजन समाप्तो घट गई। बहुत दिनों के पश्चात् यह टाइमर द्वीप में पहुँचा। न्यू गिनी के उत्तरी हिस्से को देखता हुआ यह बटेविया गया। वहाँ से इंगलैंड लौट गया। रास्ते में इसका जहाज एम्शन ट्वाप म डूब गया, परन्तु भाग्यवश यह बच गया। सन् १७१५ ई० के लगभग, इसी समुद्री यात्रा में, इसका देहान्त हुआ।

वमान कुरु

जन्म—मन् १७२८ ई०, मृत्यु—मन् १७७१ ई०

वमान जम्मू कुर्ग का जन्म दरभंगा नगर में हुआ था। वरपन ५ इमन एक ज्वालन में तैकरी कर ला था। वहाँ से यह दिष्टरी नगर भ गया। वहाँ किसी ज्वालन के मीशानर क यहाँ नैकर हा गया। वरपन स ही इमकी इच्छा नाशिक वान की गा। सर १७५५ ई० में जय अमरिका न प्रामीनियों स धेगरेना का लडाई दिहा ना इमने भी फौज में नाम निगया लिया। यहाँ इमने ऐसा अच्छा काय किया कि यह १७६५ ई० में अमरिका क उत्तर-पूर्वी समुद्र तट की देग-भाल के कार्य में नियुक्त किया गया।

मन् १७६८ ई० में आकाश-विज्ञानकी उन्नति क लिए कुक तादिति द्वाप में गया। यहाँ क राजा तुतहा न इमका नाम तुन गकर मंत्रा कर ली। तादिति लोग चोर स इससे कुक का बडी भावधानी में रहना पडा। यहाँ में यह आगे बढ़ा और न्यूजिलैंड क पूर्वी तट पर ७ अक्टूबर सर १७६९ ई० में पहुँचा। जिस स्थान पर यह पहुँचा था वहाँ की दरिद्रता का देगकर इमने उसका नाम पावटी (दरिद्रता) की

यहाँ क मनुष्य भावगिर्या न इमको उतरन न दिया । ये लोग धीरे धीरे और शत्रुओं का भागकर ग्या नाते थ । इसा लिए उत्तर का आर चलकर इसने किनारे किनारे उत्तरी तथा दक्षिणी द्वीप का परिचमा कर डाला । इन दोनों द्वीपों के मध्य के जल-सयाजक का नाम कुक का जल-सयाजक रकरा । इस देश को इसने फलो का उपन क लिए अच्छा समझा । क्या तुम बता सकत हो कि यहाँ कौन कौन स फल उत्पन्न हो सकते हैं और क्यों । रुम सागर का जल वायु कैसा हाता है ? न्यूजलैंड क उत्तरी द्वीप का जल वायु भी ऐसे ही फलों क उपयुक्त है ।

दक्षिणा द्वीप की परिचमा के पश्चात् कुक आस्ट्रेलिया के हाऊ अन्तराप की आर चला । इसी के निकट पोर्ट जैम्सन बडा सुन्दर बन्दरगाह है । उसका छाटकर यह उत्तर की आर बडा । ग्रेट बैरियर रीफ और आस्ट्रेलिया क समुद्र-तट के पाच का राह से यह धीरे धीरे बढता गया । लेकिन ट्रिन्यूलेशन अन्तरीप क निकट इवे टुण मूंगी का नुक्ली चोटियों से टकराकर, इमका जहाज टुबने लगा परन्तु इसने बडा सावधानी से उम बचा लिया । यहाँ पर छोटे छोटे काले मनुष्य दिग्गई पडे । ये लोग नङ्ग-धडङ्ग थे और नाक के बीच में लकडा डाले रहते थ जिससे बहुत भयङ्कर प्रतीत हाते थे, पर वागाव में ने ये डरपाक ।

अब गर्मी बढने लगी और हर तरह क रेशम के काडे, मच्छर और चोंटे दिग्गई पडे । जब तक जहाज का मरम्मत

होती रही तब तक कुरु न मगुद्र-नट की भूमि के धारे में बहुत सा छान-बोन का। जहाँ पर गजाज टूटा था उस स्थान को ट्रिब्यूलेशन अन्तरीप कहते हैं। इस स्थान में कुरु का बहुत सी गोभी और कले मिले। एक विचित्र पशु भी इष्टिगोचर हुआ जा कुछक कुछककर चलता था। उसका माता अपने बच्चे का पेट कर्धले में धँसाकर भागती थी। वह वरुणियों की भाँति घाम ग्याती थी। इस पशु को "कगारू" कहते हैं। यहाँ के निवासी दक्षिण भाग के निवासियों की अपेक्षा दयालु होत हैं। ये शरीर का विचित्र रङ्ग से रँगते हैं। इनके बाल या तो सड़े होते हैं या घुँघराले।

जहाज की मरम्मत हो जाय पर ये लोग फिर चल पडे। मगुद्र तो यहाँ शान्त था पर चट्टानों से टकराकर जहाज के टूटन का भय भी बहुत था। चलते चलते ये लोग यार्क अन्तरीप में पहुँचे। यार्क अन्तरीप के एक द्वीप पर उतरकर कुरु न श्रींगरेजी भण्डा गाड़ दिया। यहाँ से यह जावा की ओर चल पडा और यहाँ से अपने जहाज की अन्धरी तरह मरम्मत करवाकर सन् १७७१ ई० में उत्तमाशा अन्तरीप के मार्ग से ईंगलैंड पहुँचा।

दूसरी बार यह सन् १७७२ ई० में खाना हुआ। सन् १७७३ ई० में इसने दक्षिण ध्रुव वृत्त को पार किया, फिर पूर्व का ओर चलते चलते न्यू जीर्जैंड पहुँचा। सर्दी यहाँ बहुत थी। मगुद्र में वर्ष के बड़े बड़े टोके तैर रहे थे, जिनके चारों ओर कुहरा छाया हुआ था। कहीं कहीं जलस्तम्भ भी

बड़े भयानक रूप में दिखाई पड़े। सबको विश्वास हो गया कि दक्षिणी महाद्वीप का किनारा आ गया। इसी समय नारफॉर्क द्वीप समूह और न्यू कैलेडोनियन का पता चला। यहाँ से हॉर्न अन्तरीप के रास्ते यह लौट चला।

सन् १७७६ ई० में तीसरी बार यह रवाना हुआ और हवाई द्वीप में पहुँचा। वहाँ से यह पुनः उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट की ओर चला और तट से अपने जहाज का बहुत दूर न ग्यते हुए अलास्का की ओर रवाना हुआ। फिर बेरिङ्ग जल-संयोजक का इमन पाग किया। पहले-पहल इसी ने प्रमाणित किया कि एशिया और अमेरिका भिन्न भिन्न महाद्वीप हैं। अधिक उत्तर की ओर जाना सम्भव न था, क्योंकि बर्फ पड़ रही थी और समुद्र जम रहा था। इससे इसका वापस आना पड़ा। सन् १७७८ ई० में यह हवाई द्वीप में पहुँचा। यहाँ इसका बड़ा आवभगत हुई। पर जब इसने यहाँ के लोगों पर चोरा का दाप लगाया तो वे बहुत ही असन्तुष्ट हुए। कुछ के आदिमियों ने जब उन पर गोला चलाई तो वे कुछ पर दृष्ट पड़ और उन्होंने इसका सन् १७८६ ई० में मार डाला। इसकी विधवा स्त्री और बच्चे का सरकार ने पेंशन दी और गायल ज्यॉग्रॉफिकल सोसाइटी ने इसका स्मारक स्वरूप, इसके नाम से, एक सुवर्ण-पदक रखा।

मैथ्यू फिलडर्स

जन्म—सन १७७४ ई०, मृत्यु—सन १८१४ ई०

मैथ्यू फिलडर्स अंगरेज नाविक था। इसका जन्म लिफनगायर में हुआ। सन् १७९५ ई० में फिलडर्स आस्ट्रेलिया गया। सन् १७९८ ई० में यह जार्ज वास के साथ ही लिया और टैममानिया की प्रदर्शिका करने लगा। वहाँ से लैट-क इमने क्वींसलैंड के पता लगाने का कार्य आरम्भ किया। सन् १८०१ ई० में यह विलायत को लौट गया। वहाँ से यह फिर रवाना हुआ और उत्तमाशा अन्तरीप के रास्ते लांविन पहुँचा। वहाँ से पूर्व-दक्षिण की ओर चलकर किंग जार्ज्स द्वीप में पहुँचा। यहाँ अपने जहाज की मरम्मत कराकर यह ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे चला। कैट्सट्राफी अन्तरीप के निकट इसका कुछ मार्गो इव गये। यहाँ से यह स्पसर की खाड़ी में गया। इमने समझा कि आस्ट्रेलिया का पूरा किनारा यहाँ से आरम्भ होता है। पर इसका भीतर प्रवेश करने से पता लग गया कि यह तो खाड़ी है। किनारे पर उतरकर इमने फिलडर्स रज का पता लगाया। यहाँ से यह समुद्र में वापस आया। इस खाड़ी के मुहाने पर इसे एक द्वीप मिला। इस द्वीप में बहुत से कगारू मिले। इन्हीं के नाम से इमने इस द्वीप को प्रसिद्ध कर दिया।

आगे बटकर इसको मट विसेट की खाड़ी में। किनारे पर बहुत से पेड़ दिखाई पड़े। ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट के उत्तर में पेड़ दिखाई नहीं पड़े थे। पूर्व की ओर चलकर इसको फ्रांसीसिया का एक जहाज मिला। फिलिडर्स ने इस खाड़ी का नाम एनकाउटर रखा। यहाँ से पोर्ट फिलिप में पहुँचा और बास जल-संयोजक होते हुए पोर्ट जैकमन में गया। म. १८०२ ई० के जुलाई में यह उत्तर की ओर चला। फिर आस्ट्रेलिया और मूंगे के द्वीप के बीच की राह का देखा कर ग्रेट बैरियर रीफ के पूर्व से टारस जल संयोजक में आया। यहाँ से यह कारपेंटरिया की खाड़ी में गया। यहाँ समुद्र छिछला था, भूमि बराबर था। परन्तु स्थल पर उतरने का इसका भावना नही हुआ। इधर इसका जहाज की यह दशा थी कि आगे बढ़ना असम्भव था। फिर भी १०५ दिन की यात्रा के पश्चात् यह आर्नेहेम अन्तरीप होता हुआ मेलबिल की खाड़ी में पहुँचा और वहाँ से आर्नेहेम की खाड़ी में गया। यहाँ पर फिलिडर्स का कुछ चीनी लोग मिले जो मछली पकटने आये थे। फिलिडर्स अब इंग्लैंड का ओर चल दिया। रास्ते में मारिशस द्वीप के निकट इसे फ्रांसीसियों ने कैद कर लिया। यह छ महीने तक वहीं रहा। इसने एक पुस्तक लिखी है। इसी पुस्तक में टेरा आस्ट्रेलिस का नाम बदलकर आस्ट्रेलिया रखा है। म. १८१४ ई० में इसका देहान्त हो गया।

चार्ल्स स्टर्ट

जन्म—सन १७९५ ई०; मृत्यु—सन १८६९ ई०

आस्ट्रेलिया के भारतो प्रदेश के पता लगाये जान का काम २५ वर्ष तक चन्द रहा। अब बेंगल प्राय पूर्वोत्तम-तट की भूमि में ही बसने लगे थे। अधिकतर देश का ठोक ठोक पता न लगने से ईंग्लैंड के निर्वाचिता कैंदा हा यहाँ भज जात थे। देश के भीतर प्रवेश न करने का यह भा कारण था कि तट-भूमि के परिचयी किनारे पर एक ऊँची पहाड़ी था जिसका तटहटी में जङ्गल थे। इस पहाड़ी का पार करना असम्भव प्रतीत होता था। पर सन् १८१३ ई० में एक किसान न पहाड़ी के शिखर से परिचया उपजाऊ भूमि का पता लगाया। अब लोगों ने इस पहाड़ी का पार करना आरम्भ किया। सन् १८१५ ई० में इर्विस न लैचतन नदी का पता लगाया और बैंगर्ट के मैदान रट्टिगाचर हुए। मास्केरा नदी का भी पता लग गया। जब लोगो ने सुना कि नदियाँ पश्चिम की ओर जाती हैं तो उनका इस महाडाप के पश्चिमी किनारे के भी मित जान की आशा हुई।

सन् १८१७ ई० में ऑक्सले को रोज का कार्य सौंपा गया। उसने इन नदियों के बारे में घोडा रहत

और लौटते समय लिवरपूल के मैदान का भी देगा। कुछ दिनों में मरवजा नदी का पता लगा। सन् १८२४ ई० में ह्यूम और हॉवेल ने मर नदी का पता लगाया। आस्ट्रेलियन आल्पस के बाघ में एक दर्दमिला, इससे वे पोर्ट फिलिप में जा पहुँचे। सन् १८२६ ई० में स्टर्ट ने भी यह दखना चाहा कि क्या सब नदियाँ किसी बड़ी नदी में गिरती हैं या नहीं।

स्टर्ट का जन्म बङ्गाल में, २८ अप्रैल सन् १७६५ ई० में हुआ था। इसने पन्डन में नाम लिखवाया और सन् १८०५ ई० में यहाँ मिडनी में गया। फिर एक किशती लेकर, ७ आदमियों के साथ, यह सन् १८२८ ई० में देश के भीतर रवाना हुआ। २१ दिन के पश्चात् यह मरवजी नदी के पास पहुँचा। इसके पास अधिक भाज्य-सामग्री नहीं थी और जो कुछ था वह टूट गई। अन्त में यह मरे नदी में आया। यहाँ पर इसका बहुत सँ देगा आदमी दिखाई पड़े। वे इसको मारने की चेष्टा कर रहे थे, पर यह आगे बढ़ता ही रहा। अब इसकी किशता डार्लिंग नदी में आ पहुँची। वहाँ से यह धीरे धीरे आगे बढ़ा और समुद्र निकट आता गया। अन्त में अलेक्जेंड्रिया झील में यह जा पहुँचा। यह झील इतनी छिछली थी कि किशती का खेना असम्भव हो गया और इसका लौटना पड़ा। अब एक तो भोजन सामग्री ख़ुक गई थी, दूसरे देशी लोगों का उत्पात भी बढ़ गया था। फिर भी स्टर्ट धैर्य के साथ अपने साथियों का समझाकर आगे बढ़ता रहा।

छ महीने फं पश्चान् २००० मील का सफर तय करके स्टर्ट अपने माधियों समेत सिडनी पहुँचा ।

स्टर्ट का स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था, इसलिए सरकार ने इसका पेंशन देना स्वीकार किया । जब वह ईंगलैट पहुँचा तो विलकुल अन्धा हो गया था । मन् १८२६ ई० में इसका देहान्त हो गया ।

एडवर्ड जॉन आयर

जन्म—सन् १८१५ ई०, मृत्यु—सन् १९०१ ई०

अंगरेज लोग आस्ट्रेलिया में एक स्थान के पशुओं के स्थान पर अधिकार जमाते रहे। अब उनका ज्ञात हो गया था कि यदि भिन्न भिन्न देशों से यहाँ के मैदानों में भेड़ बकरी, गाय, घेंस और घोड़े लाकर पाले जायें तो उनका लिए यहाँ पर पर्याप्त घास है। उन्होंने कुछ ऐसे जानवरों का भेगवा भी लिया था और उन्हें पालने का काम यहाँ के फेंदियों से लिया जाता था। पर अभी तक देश के बहुत से भागों का पता नहीं लगा था। इसलिए इन जानवरों के अधिकारियों का इच्छा हुई कि घास के और भी मैदानों का पता लगे तो अच्छा है। इसी निमित्त, रोज के कार्य के लिए कुछ मनुष्यों का आवश्यकता पड़ी। आयर ने इस कार्य का उठा लिया।

एडवर्ड जॉन आयर का जन्म चार्ल्सगायर में हुआ था। सन् १८३३ ई० में यह आस्ट्रेलिया आया था। इन्होंने पहले-पहल भेड़ों की रखवाली का काम करना आरम्भ किया और यहाँ के लोगों का सी भाषा और आदतों को भी सीखा लिया।

सन् १८४० ई० में आयर दश क अन्दर घुस पडा । रास्ते म इमका टारेंस भील मिला और आमपाम भी एसी ही अनेक भीलें मिलीं । इसलिए इसने अपना मार्ग बदल दिया । दक्षिण की ओर चलते चलते यह आयर क प्रायद्वीप में पहुँचा, फिर वहाँ म पश्चिम का आग आस्ट्रेलियन वाइट क किनारे किनारे चला । यह भूमि जलहीन थी । मीलों तक जलाशय दिखाई नहीं पडते थे । मार्ग भी बहुत लम्बा था । पहले-पहल यह फाउलर का खाड़ी म पहुँचा । यद्यपि लोगो ने इमका आगे बढ़ने से राका पर यह आगे बढ़ता ही गया । आधी बहुत ही वेग से चलने लगी । रत से आँखें अन्धी होने लगा और छोटे छोटे कीडो ने इमको बहुत ही कष्ट दिया । इमक साथ जितना जल था वह अब समाप्त हो गया । मारे प्यास क यह घबरा उठा । इसक साथ काले आदमियो ने भी इसे घोरता दिया । उन्हाने आयर क अँगरेज मार्या की हत्या करक उमका मामान लूट दिया । पर अब इमने आस्ट्रेलियन वाइट का पार कर लिया था और यह ऐसे प्रान्त में पहुँच गया था जहाँ जाडे के दिनों में वर्षा हो रही थी । इसक पास कपडे नहीं थे अतएव पानी में भीगकर यह ठिठुरने लगा । सौभाग्य-वश एक फ्रांसीसी जहाज तट क निकट दिखाई दिया । उसी से इसे कुछ खाना और कपडा मिला । अब यह और पश्चिम की ओर चला । रास्ते में छोटी छोटी नदियाँ मिलीं । इस

एडवर्ड जॉन आयर

जन्म—सन् १८१५ ई०, मृत्यु—सन् १९०१ ई०

श्रेणरेज लोग आस्ट्रेलिया में एक म्यान के पध्यात् दृसर म्यान पर अधिकार जमाते रहे । अत्र उनका ज्ञात हो गया था कि यदि भिन्न भिन्न देशों से यहाँ के मैदानों में भड़, बकरों, गाय, बैल और घोड़े लाकर पाले जायें तो उनके लिए यहाँ पर पर्याप्त घास है । उन्होंने कुछ ऐसे जानवरों का मँगवा भी लिया था और उन्हें पालने का काम यहाँ के कँदियाँ से लिया जाता था । पर अभी तक देश के बहुत से भागों का पता नहीं लगा था । इसलिए इन जानवरों के अधिकारियों का इच्छा हुई कि घास के और भी मैदान का पता लगे तो अच्छा हो । इसी निमित्त, राज के कार्य के लिए कुछ मनुष्यों की आवश्यकता पड़ी । आयर ने इस कार्य को उठा लिया ।

एडवर्ड जॉन आयर का जन्म यार्कगायर में हुआ था । सन् १८३३ ई० में यह आस्ट्रेलिया आया था । इमने पहले पहल भेड़ों का रखवाली का काम करना आरम्भ किया और रेगा लोगों की सी भाषा और आदतों को भी सीख लिया ।

सन् १८४० ई० में आयर देश में अन्दर घुस पडा। रास्ते में इमका टारेंस भील मिला और आसपास भी ऐसी ही अनेक भीले मिलीं। इसलिए इमन अपना मार्ग बदल दिया। दक्षिण की ओर चलते चलते यह आयर के प्रायद्वीप में पहुँचा, फिर वहाँ से पश्चिम की ओर आस्ट्रेलियन वाइट के किनारे किनारे चला। यह भूमि जलहीन थी। मीलों तक जलाशय दिखाई नहा पडते थे। मार्ग भी बहुत लम्बा था। पहले-पहल यह फाउलर का खाड़ी में पहुँचा। यत्रपि लार्गा ने इमको आगे बढ़ने से रोककर पर यह आगे बढ़ता ही गया। आधी बहुत ही वेग से चलने लगी। रत से आरों अन्धी होने लगा और छोटे छोटे कीडों ने इमका बहुत ही कष्ट दिया। इमके साथ जितना जल था वह अब समाप्त हो गया। मार प्यास के यह घबरा उठा। इमके साथी काले आदमियों ने भी इसे धोखा दिया। उन्होंने आयर के अँगरेज साथी की हत्या करके उसका मामान लूट लिया। पर अब इसने आस्ट्रेलियन वाइट को पार कर लिया था और यह ऐसे प्रान्त में पहुँच गया था जहाँ जाटे के दिनों में वर्षा हो रही थी। इमके पास कपडे नहीं थे अतएव पाना से भोगकर यह ठिठुरने लगा। सौभाग्य-वश एक प्रासीसी जहाज तट के निकट दिखाई दिया। उमी से इसे कुछ खाना और रुपडा मिला। अब यह और पश्चिम की ओर चला। रास्ते में छोटी छोटी नदियाँ मिलीं। इस

एडवर्ड जॉन आयर

जन्म—सन् १८१५ ई०, मृत्यु—सन् १९०१ ई०

अंगरेज लोग आस्ट्रेलिया में एक स्थान के पश्चात् दूसरे स्थान पर अधिकार जमाते रहे। अत्र उनका ज्ञात हो गया था कि यदि भिन्न भिन्न दशों से यहाँ के मैदानों में भेड़, बकरी गाय, बैल और घोड़े लाकर पाले जायें तो उनके लिए यहाँ पर पर्याप्त घास है। उन्होंने कुछ ऐसे जानवरों का मँगवा भी लिया था और उन्हें पालन का काम यहाँ के फैंदिया से लिया जाता था। पर अभी तक देश के बहुत से भागों का पता नहीं लगा था। इसलिए इन जानवरों के अधिकारियों की इच्छा हुई कि घास के और भी मैदानों का पता लगे तो अच्छा हो। इसी निमित्त, रोज के कार्य के लिए, कुछ मनुष्या का आवश्यकता पड़ी। आयर ने इस कार्य का उठा लिया।

एडवर्ड जॉन आयर का जन्म यार्कगायर में हुआ था। सन् १८३३ ई० में यत् आस्ट्रेलिया आया था। इसमें पहले पहल भेड़ों की रखवाली का काम करना आरम्भ किया और देगा लोगों की सी भाषा और आदतों को भी सीखा लिया।

सन् १८४० ई० में आयर देश में अन्दर घुस पड़ा। रास्ते में इमका टारम भाल मिना और आमपास भा एसी ही अनक भीलें मिलीं। इमलिए उसने अपना मार्ग बदल दिया। दक्षिण की ओर चलते चलते यह आयर के प्रायद्वीप में पहुँचा, फिर वहाँ से पश्चिम की ओर आस्ट्रेलियन वाइट के किनारे किनारे चला। यह भूमि जलहीन थी। मोलों तक जलाशय दिखाई नहीं पड़ते थे। मार्ग भी बहुत लम्बा था। पहले-पहल यह फाउलर की खाड़ी में पहुँचा। यद्यपि लोगों ने इमका आगे बढ़ने से रोकना पर यह आगे बढ़ता ही गया। आँधा बहुत ही बग से चलने लगी। रेत से ओरों अन्धों होने लगी और छोटे छोटे कीटों ने इसको बहुत हाँक दिया। इसके साथ जितना जल था वह अब समाप्त हो गया। मार प्यास के यह घबरा उठा। इसके साथी काले आदमियों ने भी इसे धोखा दिया। उन्होंने आयर के अंगरेज साथी की हत्या करके उसका सामान लूट लिया। पर अब इसने आस्ट्रेलियन वाइट का पार कर लिया था और यह ऐसे प्रान्त में पहुँच गया था जहाँ जाड़े के दिनों में वर्षा हो रही थी। इसके पास कपड़ नहीं थे अतएव पानी से भोगकर यह ठिठुरने लगा। सौभाग्य-वश एक फ्रांसीसी जहाज तट के निकट दिखाई दिया। उसी से इसे कुछ खाना और कपड़ा मिला। अब यह और पश्चिम की ओर चला। रास्ते में छोटी छोटी नदियाँ मिलीं।

नदी का पता बताया। मेकनी नदी मुहाने की ओर गहरी जाती जाती थी। उसकी किनार पर खान को खेर मिलते थे। वअर नदी के मङ्गम-स्थान पर कोयला जलता दिखाई पडा। मेकेंजी लिखाता है कि यहाँ नुकीले पेड दिखाई पडने हैं और उत्तर की ओर इनकी मर्या घटती जाती है। जब यह समुद्र में पहुँचा ता वह जमा हुआ जात हुआ और किरती आगे न उड सका। इमको फोर्ट चिपवैन में लौट जाना पडा।

मरुचा ईंगलिस्तान वापस गया। इमने अब यह ठान लिया था कि देश का पार कर पैसिफिक तट पर पहुँचे। इमलिफ यह ईंगलिस्तान से लौटकर पॉस नदी के रास्ते से रॉकी पर्वत के समीप पहुँचा। अब यह माधियां समेत अपने अमबाव को रुन्धे पर लादे हुए रॉकी पहाड़ को पार करने लगा। वहाँ लम्बे नुकीले पेड दिखाई पडे, वावर जानवर भी दिखाई पडा। जब पहाड़ के दूमरी आर ये लोग पहुँचे तो इनको फ्रेजर नदी पश्चिम की आर बहती मिली। इम नदी में कुछ दूर चलकर जब इन्होंने देखा कि यह बहुत वेग से बह रही है तो ये लोग किरती का छोडकर पैदल ही सन् १७८३ ई० में समुद्र के किनारे पहुँचे। यहाँ अपने पहुँचने का चिद्र रगकर ये लोग लौट पडे। एक महीने बाद मेकेंजी फोर्ट चिपवैन में पहुँचा। यही सबसे पहला अंगरेज था जिमने इम महाद्वीप का पहली बार पार किया था।

सर जॉन फ्रैंकलिन

जन्म-सन १७८६ ई०, मृत्यु-सन १८४७ ई० के नामग

फ्रैंकलिन का जन्म निकुन्शायर में हुआ था। इनने बचपन में ही नाविक का काम आरम्भ किया था और बहुत बड़ी बड़ी तडाइयों में नाम पैदा कर लिया था। सन् १८१६ ई० में वह उत्तरी अमेरिका के उत्तरी हिस्स का पता लगाने के लिए भेजा गया। अनेक दुःख भोगने के पश्चात् फ्रैंकलिन सन् १८२० ई० में विनायत वापस गया। वहाँ इसने विवाह कर लिया। इसका कप्तान की पदवी भी मिली। इनने मैकेजी के मुहाने से कापरमाइन नदी तक का पता लगाना चाहा और वहाँ से मगुड के रास्ते उत्तर-पश्चिम का राह का भी पता लगाने की इच्छा की।

सन् १८३१ ई० में फ्रैंकलिन फिर रवाना हुआ। आस्त-पास्त की जगह बारहमिगी से भरी हुई थी। नदियों में बर्फ के बड़े बड़े टुकड़े नैरते थे। किशती का खेना बहुत ही कठिन था। ग्राह्य-नामधी प्रष्ट गइ थी। लोग कोई और जूतों का चमड़ा खाते थे। कभी पिछियाँ मिल जाती थी तो इनको बड़ा प्रमन्नता हाती थी। ५००० मील चलने के पश्चात् ये लोग यार्क प्रैक्टरी में आय। इस यात्रा के पश्चात् फ्रैंक-

लिन गिलायत गया । इसका स्त्री मर चुका थी, इससे इसने दुबारा विवाह कर लिया ।

सन् १८३६ ई० में यह चैन डीगमर्लैंड का गवर्नर नियुक्त हुआ । सन् १८४५ ई० में, ६० वर्ष की अवस्था में, उत्तरी अमेरिका के उत्तरी समुद्र का पता लगाने के लिए, यह तीसरी बार खाना हुआ । इसने अपने साथ दो जहाज ले लिये और ३ वर्ष के लिए उपयुक्त खाद्य-सामग्री भी साथ ले ली । जाड़ का मासम आत पर यह रिले अन्तरीप में वीची द्वीप के बीच एक गुफा में ठिका । पर कुछ दिनों के पश्चात् रॉस कॅप्टन और पाइट विक्टर के निरूट इसके रूपडे और डायरी मिली जिससे ज्ञात हुआ कि यहाँ कहीं आम-पास, सन् १८४७ ई० के लगभग, इसका देहान्त हुआ ।

अन्तरीप को पार करके यह उत्तर की ओर बढ़ा। अब बर्फ पटन लगा लेकिन जहाज बर्फ में निरुलता ही गया।

चलते चलते जहाज ८३^० उत्तरी अक्षांश में पहुँचा। यहाँ जहाज का छोड़कर डाक्टर नैनसन पैदल चला। कुत्तों ने इसकी त्रिना पहियों का गाड़ी का वेग का साथ रखा। अब यह ८६^० उत्तरी अक्षांश में पहुँचा। यहाँ बर्फ की ऊँची दीवार खड़ी थी। उससे यह आगे न बढ़ सका। लौटते समय रास्ते में सफेद भालुओं ने इस पर आक्रमण किया। क्या तुम इस प्रान्त के और भयङ्कर जानवरों का नाम बता सकते हो ?

नैनसन ने बड़ी कठिनाई में अपनी रजा की। फ्रेंज जैसे फ्लैंड के पूर्वी द्वीप समूह में इसने जाड़े का मासम सन् १८६५-६६ ई० में बिताया। फिर गर्मी पड़ते ही यह दक्षिण की ओर चला। इस गाने का कोई अनाज न मिला, इसलिए इसने यहाँ के कुत्ता, भालुओं और सील मछलियों का मारकर खाया। सन् १८६७ ई० में यह लौट आया।

सन् १६०६ ई० में उत्तरी ध्रुव का पता पहली बार एडमिरल पियरी ने लगाया था। ध्रुव के बारे में वह कहता है— यहाँ भूमि नहीं है, गहरे समुद्र का उत्तरी सिरा जमकर बर्फ हो गया है और चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखाई पड़ती है।

